

जनांकिकी का अर्थ समझाइए।

Explain meaning of Demography

Demography शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्द Demo तथा Graphy से बना है। Demo का अर्थ जनता तथा Graphy का अर्थ लिखना से मिलकर बना है जिसका अर्थ है 'जनता के विषय में लिखना'। इस शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग फ्रांसीसी लेखक आरिले गुडलार्ड ने 1855 में किया था। प्राचीन काल में जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु इकट्ठे किये जाते थे और जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन का क्षेत्र गणना तक ही सीमित था लेकिन आधुनिक युग में जनसंख्या का आकार, संरचना तथा अन्य विवरण का अध्ययन तत्त्वपूर्ण सोचिए एवं गणितीय विश्लेषण के आधार पर किया जाने लगा। हिल, जोसी के अनुसार « जनांकिकी वह विज्ञान है जो मानव-जीवी, उसके वृद्धि, ह्रास तथा मृत्यु का सांख्यिकीय पद्धति से अध्ययन करता है। »

थाम्पसन एवं लैविस के अनुसार « जनांकिकी रुचि, वर्तमान समय की जनसंख्या के आकार, संरचना तथा वितरण में हो रही बल्लि समय-समय पर इन पक्षों में हो रहे परिवर्तन एवं इन परिवर्तनों के कारणों में भी है। »

इस प्रकार जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या के समस्त निर्धारक तत्वों तथा उनके परिणामों का अध्ययन किया जाता है। इनमें जनसंख्या की सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा लैंगिक स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

जनांकिकी की विषय सामग्री (2)

Subject matter of Demography

वर्तमान समय में जनांकिकी विज्ञान की व्यापकता एवं उपादेयता के आधार पर इस शास्त्र की विषय सामग्री को पांच भागों में बांटा गया है -

- 1 - जनसंख्या का आकार
- 2 जनसंख्या की संरचना
- 3 जनसंख्या का वितरण
- 4 जनसंख्या को प्रभावित करने वाले तत्व
- 5 जनसंख्या नीति

प्रथम जनसंख्या का आकार किसी समय किसी स्थान विशेष में रहने वाली जनसमुदाय की समस्त जनसंख्या संख्या को उस स्थान विशेष की जनसंख्या का आकार कहा जाता है जनसंख्या परिवर्तन का माता व यर जानने के साथ-साथ इस तथ्य का विश्लेषण करना आवश्यक है कि इसके परिवर्तन के कारण कौन-कौन से हैं जन्म, मृत्यु एवं प्रवास। सामाजिक एवं सांस्कृतिक को भी सामिल करते हैं द्वितीय में जनसंख्या की संरचना जहाँ पर दो स्थानों की जनसंख्या का आकार समान होने पर भी उनमें लिंग आयु, जाति, धर्म तथा निवास आदि के आधार पर भिन्नता हो सकती है। तृतीय में यह अध्ययन किया जाता है कि वह जनसंख्या उसके किसी हिस्से में जनसंख्या का वितरण कैसा है। इनमें समग्रतात्मक विधि, वितरणात्मक विधि जनसंख्या के सम्बन्ध में भौगोलिक डकार्ड, महादीप, रेगिस्तान क्षेत्र पर्वतीय क्षेत्र तथा सम्पूर्ण विश्व को आधार मानकर तथा देश, प्रदेश, जिला, शहर, नगर, ग्राम आदि होते हैं चतुर्थ में जब मनुष्य का सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता है मर्यादित जब मानव सभ्यता से विभाजित हो जाता है बैरोजगाह को रोजगार मिलने से जनांकिकी परिवेश को प्रभावित करता है पांचवा जनसंख्या नीति में यह देखा जाता है देश की जनसंख्या के आकार को उसके साधनों के अनुसूप कैसे धराया या बढ़ाया जाय कैसे गुणात्मक एवं परिमाणत्मक आधार हो।

जमाविक्री एवं अर्थशास्त्र में सम्बन्ध स्पष्ट
किए।

③
Explanation of the Relation between
Economics and Demography

जमाविक्री का अर्थशास्त्र से घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाता
है। अर्थ मानव के सभी क्रिया कलापों की धुरी है तथा
अर्थशास्त्र मानव के आर्थिक बृद्धियों का अध्ययन
करता है। किमिन्न आर्थिक चरों के परिवर्तन जमाविक्री
चरों व घटकों को प्रभावित करते हैं तथा जमाविक्री घटकों
किसी देश के निवासियों आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित करते
हैं। इस प्रकार जनसंख्या विकास एवं आर्थिक विकास दोनों ही
एक दूसरे पर आश्रित हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
जनसंख्या बढ़ने से जीविका के माध्यम गिरता है जीवन स्तर गिरता
है इसी तरह से आर्थिक विकास से जन्म दर गिरती है,
मृत्यु दर गिरती है, प्रवास बढ़ता है और बेरोजगारी तथा
भुजक्यः - समस्या का निदान होता है।

इस प्रकार जनसंख्या तथा आर्थिक विकास के मध्य
घोहरा सम्बन्ध पाया जाता है। जनसंख्या बढ़ने आर्थिक विकास
के लिए आवश्यक है। इसीलिए प्रयत्न भी है जब
जनसंख्या अधिक होती है तो सम्पूर्ण आर्थिक क्रिया बढ़
जाती है। इसमें बेरोजगारी, पीछे आगम, शिक्षा, आवागमन
आद्यान्त घटती, मध्य में बढ़ती, कमल, सौंदर्य विनिर्माण, स्वास्थ्य
की समस्या उत्पन्न हो जाती है। स्वास्थ्य बढ़े बिना देश के
लिए उस शक्ति में बढ़ती, बाजार का विस्तार, मोग में बढ़ती,
उत्पादन बढ़ती, रोजगार एवं आय में बढ़ती होती है। अर्थव्यवस्था
प्रगति के पथ पर अग्रसर हो जाती है।

जनंकिनी का महत्व

Importance of Demography

जनंकिनी के महत्व को समस्त अर्थव्यवस्था को तीन भागों में बांटा गया है - विकसित अर्थव्यवस्था में जिसमें जनसंख्या की कुल मांग को पूर्ण रोजगार स्तर बनाये रखने का एक साधन माना जाता है विकसित देशों में वस्तु की पूर्ति की नहीं बल्कि मांग की समस्या है अतः बढ़ती हुई जनसंख्या वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रभावपूर्ण मांग में वृद्धि करती है जिससे उत्पादन एवं रोजगार में वृद्धि होती है अर्थशास्त्र में वृद्धि होती है जनस्वास्थ्य, आवस्य, बीमा, शिक्षा आदि का बहुत महत्व दिया जाता है द्वितीय में निचोड़ित अर्थव्यवस्था है इसमें उन देशों में कार्यरत जनसंख्या महिलाओं का आर्थिक कार्यों में योगदान, राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय, प्रजनन दर, मृत्युक्रम, परिवार का आकार, स्वास्थ्य पोषण, शिक्षा आदि अनेक आर्थिक तत्व हैं जो जनंकिनी के ही अवयव इसी लिए स्वतन्त्र अर्थव्यवस्थाओं की अपेक्षा निश्चित अर्थव्यवस्थाएं जनसंख्या में संरचनात्मक परिवर्तन के प्रति अधिक जागरूक हैं तृतीय है विकासशील अर्थव्यवस्था मानव अर्थ आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला उत्पादन का एक सश्रेय साधन है यह ऐसी निर्माण शक्ति को निर्धारित करती है जो लेविस के अनुसार विकास मानव विकास का परिणाम है। आर्थिक विकास की दृष्टि से जनसंख्या सम्बन्धी माकड़े का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि जनसंख्या के माकड़ों के आधार पर ही आर्थिक विकास की प्रवृत्ति, व्यवसायिक योजना, ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की दर, परिवार नियोजन और जाति समस्या आदि का अध्ययन होता है।

आयु संरचना से आप क्या समझते हैं।

भारत में जनसांख्यिकी संक्रमण के तीसरे अवस्था के पूर्व में है। यद्यपि जन्म दर में गिरावट की प्रवृत्ति आ गयी है लेकिन लेविक रूप से पुनरुत्पादक वर्ग (संतानोत्पत्ति) का आकार बड़ा है होने के कारण कुल जनसंख्या दृष्टि में अभी भी विस्फोटक प्रवृत्ति बनी हुई है। सामान्य रूप से विभिन्न आयु वर्गों में अपनी विशेषताएं व समस्याएं हैं। जहाँ बाल एवं वृद्ध आयु वर्ग की निर्भरता जनसंख्या के अन्तर्गत आती है वहीं युवा व पौढ़ आयु वर्ग अर्थव्यवस्था के विकास में अपना योगदान देते हैं। बाल आयु वर्ग (0-14) वर्ष में 32% जनसंख्या है। पुनः इसे तीन भागों में बाटा जा सकता है 0-4 आयु वर्ग में 9%, 5-9 वर्ष में 11%, 10-14 आयु वर्ग में 12% जनसंख्या है। जैसे-जैसे जन्म दर में गिरावट आयेगी वैसे-वैसे 0-4 वर्ग में कमी होगी जिसका परिणाम 0-14 आयु वर्ग के अन्य उप वर्ग पर भी पड़ेगा।

यह आयु वर्ग एक निर्भर जनसंख्या है। यद्यपि सामाजिक आर्थिक कारणों से इस वर्ग का 3-4% जनसंख्या कार्यरत है। जो बाल मजदूरी के रूप में दिखायी पड़ती है। युवा एवं पौढ़ जनसंख्या लगभग 60% है। इनमें युवा आयु वर्ग (15-39) में 42% जनसंख्या तथा पौढ़ आयु वर्ग (40-64) में 18% जनसंख्या आती है। इनमें 15-39 आयु वर्ग के लोग अधिक कार्यरत हैं। कार्यरत जनसंख्या का 58% आयुर्वर्ग इसी वर्ग से होती है। इनमें से 15-19 आयु वर्ग के लोग निर्भर जनसंख्या के अन्तर्गत रहे जा सकते हैं क्योंकि इनकी उत्पादकता काफी कम है। 15-39 आयु वर्ग के लिए रूप से पुनरुत्पादक वर्ग है। पौढ़ आयु वर्ग में 40-64 आयु वर्ग के लोग आते हैं, जो 22% जनसंख्या दृष्टि आयु वर्ग (64+) है जो 8% जनसंख्या आती है।

लिंगानुपात का अर्थ समझाएँ

Explain the Meaning of Sex Ratio

इसका तात्पर्य किसी जनसंख्या के सभी आयु वर्गों में स्त्री व पुरुषों के अनुपात से है। किसी प्रदेश के सामाजिक-आर्थिक षराओं को समझने व प्रादेशिक विशेषण के लिए यह एक महत्वपूर्ण सूचकांक है। लिंगानुपात किसी विशिष्ट समय पर किसी देश स्थान या जाति विशेष के स्त्री तथा पुरुष की संख्या के बीच अनुपात को प्रदर्शित करता है। इस अनुपात की गणना करने के लिए स्त्रियों की संख्या में पुरुषों की संख्या से भाग देकर प्राप्त अभ्यनफल को 1000 से गुणा कर दिया जाता है।

$$\text{Sex Ratio} = \frac{F}{M} \times 1000$$

F = स्त्रियों

M = पुरुष

किसी प्रदेश में इनके अध्ययन के द्वारा वहाँ की जनसंख्या वृद्धि दर, विवाह दर, व्यवसायिक संरचना जैसे जमांकियों का पता लगाया जा सकता है। सामान्य रूप से लिंगानुपात को 900 हजार पुरुषों में स्त्रियों की संख्या प्राप्त किया जाता है। भारत 1901 में लिंगानुपात 972/1000 था 1951 में 945/1000 हो गया जबकि 2011 में यह 943/1000 अर्थात् सामान्य रूप से लिंगानुपात में घटने की प्रवृत्ति है यद्यपि 2001 जनगणना में 933/1000 का अपेक्षा 2011 में थोड़ा वृद्धि हुई।

साक्षरता से क्या आशय है?

साक्षरता का आशय जो किसी भी भाषा में पढ़ने के साथ-साथ लिखने में भी सक्षम हो एवं (दैनिकी) उम्र 7 वर्ष या अधिक हो अर्थात् साक्षर उसे कहा जाता है जो 7 वर्ष से अधिक उम्र का कोई भी व्यक्ति किसी भी भाषा में पढ़ एवं लिख सके साथ ही सामान्य ~~जानकारी~~ ~~गणितीय~~ जोड़-घटाना का समझ हो तो उसे साक्षर कहा जाता है। वस्तुतः साक्षर व्यक्ति को जागरूक व शिक्षित बनाना अपेक्षाकृत सरल होता है। इससे इनके कार्यिक क्षमता में वृद्धि होती है तथा इनका संसाधनात्मक महत्व बढ़ता है। भारत मध्यम साक्षरता वाले देशों में आता है।

वर्ष 2011 के आँकड़ों के अनुसार 74.04% साक्षरता दर है जिसमें महिला साक्षरता दर 65.46% तथा पुरुष साक्षरता दर 82.14% है। ~~गैर~~ ~~सामान्य~~ शिक्षा के माध्यम से देश में नवरोड़ लोगों को साक्षर बनाया गया। जिसमें 6 करोड़ महिलाएं हैं अभी भी $\frac{1}{4}$ भाग जनसंख्या निरक्षर है। इससे इनके कार्यिक क्षमता में गिरावट आ जाती है। सामान्य तौर पर केरल, मिजोरम व लक्षद्वीप में साक्षरता दर 90% से अधिक है जबकि बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व अण्डमान प्रदेश में यह 40% से भी कम है।

नगरीकरण की अवधारणा

Concept of Urbanization

मगर या शहर किसी क्षेत्र विशेष के भौतिक विकास और सांस्कृतिक प्रगति के सूचक होते हैं। इस प्रकार नगरीकरण के अन्तर्गत परिवर्तन का सम्पूर्ण प्रक्रिया और उन परिणामों को शामिल किया जाता है जो कृषि अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था में बदलने पर तथा लघु अनुकूल समाज से उन्नत महानगरीय समाज में परिवर्तन होने से उत्पन्न होती है। सामाजिक रूप से ग्रामीण जनसंख्या से नगरीय जनसंख्या में परिवर्तन की प्रक्रिया को नगरीयकरण कहा जाता है। ग्रामीण जनसंख्या का अपेक्षा नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण गांवों से नगरों की ओर प्रवास है। नगरीकरण मुख्यतः दो कारणों पर निर्भर करता है।

- 1- नगरीय बास्तियों में रहने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि
 - 2- और कृषि व्यवसाय में संलग्न लोगों की संख्या में वृद्धि
- आज के वाद भारत में नगरीकरण की तीव्र वृद्धि देखी गयी जिसका मुख्य कारण ग्रामीण - नगरीय स्थानान्तरण रहा है। यद्यपि इनके साथ मगर भी बसे हैं जो अपनी कार्य स्थल विशेषताओं के आधार पर आकर्षण का केन्द्र बने हैं। भारत में नगरीयकरण 1901 में 2.55 करोड़ थी जो 2011 के जनगणना के अनुसार बढ़कर 31.17 करोड़ हो गयी है। अतः वर्तमान में देश का कुल जनसंख्या का 31.16% भाग नगरों में रहता है पिछले 110 वर्षों में नगरीकरण में 15 गुना की वृद्धि हुई है। इस प्रकार विश्व के कम नगरीकृत देशों के क्षेत्रों में भारत है। विश्व का लगभग 52% जनसंख्या नगरीय है। गोवा भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य है जहाँ पर नगरीकरण 62.17% है।

भारत में नगरीकरण की समस्याएं -

जनसंख्या का यह सर्वाधिक वृद्धि दर अनेक सामाजिक आर्थिक तथा पर्यावरण समस्याओं का कारण है। भारतीय नगरीकरण की कुछ प्रमुख समस्याएं हैं -

1- स्थापना की कमी -

बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास मांगें बहुत अधिक स्थापना की आवश्यकता होती है। जो मेट्रो तथा औद्योगिक शहरों के कारण आसानी से उपलब्ध नहीं होती है। जब नगरी की वृद्धि होती है तो ग्रामीण इलाकों में कोलोनियां बनने लगती हैं। इससे प्रमुख प्लेनिटर अधिक भारी श्रम पड़ता है तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए इस अधिक पर निर्भरता होती है।

2. निवास के लिए मकानों की अपर्याप्तता -

विश्वभर में देशों में नगरीय जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हो रही है। जिससे मकानों की कमी हो रही है। एक अनुमान के अनुसार भारतीय नगरी में प्रति वर्ष लगभग 1.7 मिलियन मकानों की कमी हो रही है।

3 सामाजिक सुख सुविधाओं की कमी -

आवास, बिजली, पानी परिवहन, सफाई का प्रबंध, गंदे पानी को हटाने का प्रबंध शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, उद्यान खेल के मैदान, मनोरंजन की सुविधाओं पर अधिक भार पड़ता है।

4 प्रदूषण -

नगरी की बढ़ती भीड़ उद्योग तथा भारी वाहनों की संख्या में वृद्धि होती है जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट आती है। यह वायु, जल, ध्वनि तथा अपशिष्ट पदार्थ के प्रदूषण के कारण उत्पन्न हुई है।

5 परिवहन की समस्या -

परिवहन मार्ग विरोध और भीड़-भाड़ भारतीय नगरी की प्रमुख समस्या है जिससे दिन-प्रतिदिन दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

शिशु-मृत्यु दर (Infant Mortality Rate) IMR

शिशु मृत्यु दर तात्पर्य आधु के प्रथम वर्ष की मृत्युओं से है। यह वर्ष जीवन कालिका की सर्वाधिक प्रभावित करने वाला वर्ष होता है क्योंकि छद्मवस्था की छोड़कर सामान्यतः उस वर्ष में होने वाली मृत्युओं की संख्या आधु के किसी अन्य वर्ष की अपेक्षा अधिक हो जाती है। सामान्यतया जीवन के प्रथम एक वर्ष तक मृत्यु का जोखिम सबसे अधिक होता है शिशु मृत्यु दरें सामान्य की सामान्य स्तर स्वरूप 1000 बच्चों की सर्वोच्च संख्याओं में मानी जाती हैं। शिशु मृत्यु दर जितनी कम होगी, जीवन स्तर और जनस्वरूप उतना ही अच्छा होगा तथा प्रजनन दर में भी कम होगी क्योंकि वहां बच्चे के जीवित रहने की सम्भावना भी अधिक होती है।

जहां शिशु मृत्यु दर अधिक होती है वहां प्रजनन दर भी बढ़ी होती है क्योंकि दम्पति विशेष की सहजता से विश्वास नहीं हो पाता कि उसका बच्चा जीवित हो रहेगा। शिशु मृत्यु दर घटाने के लिए जीवन के प्रथम प्रथम वर्ष में हुई मृत्यु दर को इस साल विशेष में हुए जन्मों से भाग दिया जाता है। जो प्राप्त संख्या को शिशु मृत्यु दर कहा जाता है।

~~शिशु मृत्यु दर (IMR) =~~

शिशु मृत्यु दर (IMR) =

किसी निश्चित वर्ष और क्षेत्र में एक वर्ष से कम आयु वाले बच्चों की मृत्यु संख्या

उसी वर्ष व क्षेत्र में सजीव जन्मे शिशुओं की संख्या

1000

प्रवास का महत्व

Importance of Migration

प्रवास का आशय मानव समुदाय के एक भौगोलिक इकाई से दूसरी भौगोलिक इकाई में प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि कारकों के कारण स्थानान्तरण से है। आदि काल से ही मानव घुमन्तू प्रवृत्ति का रहा है। वह भूमि एवं साधनों की खोज हेतु महाभारतियों, युद्ध, उत्पन्न-चार, भेदभाव के कारण तथा उन्नत जीवन की आशा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसता है। लम्बे समय तक स्थानीय रूप से जाने की ही देशान्तर कहा जाता है।

प्रवास का देशान्तरण एक महत्वपूर्ण जनोन्मुखी घटना है जो जनसंख्या के आकार, वितरण तथा संरचना में शक्ति प्रभावित करता है। जननशीलता तथा मृत्यु जनसंख्या को बहुत ही धीमी गति से प्रभावित करते हैं। प्रवास एक जनक घटना है जिसमें किसी प्रकार की निश्चितता नहीं होती है। तथा इसका मापन तथा अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। यदि व्यक्तियों का एक बड़े समूह का एक साथ स्थानान्तरण हो जाय तो इससे देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था में चल बली मच जाती है। यह सम्पदा संस्कृति, आचार विचार तथा जनसंख्या की संरचना आदि में परिवर्तन ला देती है। मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता-जाता रहता है; जिसके परिणामस्वरूप उसका सामान्य निवास बदल जाता है। मनुष्य के निवास-स्थान के परिवर्तन की इस घटना को देशान्तरण कहते हैं।

प्रवास को प्रभावित करने वाले घटक
factor affecting migration

देशान्तर भा प्रवास को प्रभावित करने वाले प्रमुख
मुख्य भाग है -

- 1- आकर्षक कारण (push factor) इसमें देशान्तर के आकर्षक
कारण का अर्थ जब मनुष्य को अपने निवास स्थान को छोड़कर
दूसरे जगह बसने को प्रोत्साहित होता है तो इसे कहते हैं।
जैसे रोजगार एवं व्यवसाय के अभाव, असुर, शिक्षा एवं
आवास सुविधा, मनोरंजन के साधनों का उपलब्धता, स्वास्थ्य
जलवायु, उन्नत मारीय जीवन आदि के कारण जाते हैं।
- 2- प्राकृतिक कारण - प्राकृतिक या भौगोलिक कारणों से भाग्य
लोग प्रवास करते हैं। जैसे जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक
पक्षोप बाढ़, सूखा, दुर्भिक्ष, भूकम्प, महामारी आदि घटनाओं
के कारण प्रवास प्रोत्साहित होती है।
- 3- आर्थिक कारण - कृषि भोग्य भूमि का अभाव, जाय सामग्री का
अभाव के कारण मानव प्रवास के लिए बाध्य बाध्य होता है।
सौधोगिकरण, परिवहन के साधन आदि प्रमुख कारण है।
- 4- राजनीतिक कारण - अनेक प्रकार के राजनीतिक निर्णयों
से लोग प्रवास के लिए बाध्य हो जाते हैं। जैसे सौधोगिक
बदला से भाग्य से शहर में और गरीबों की बढ़ती है।
जैसे - जमीन राजनीतिक निर्णयों के कारण लोग
स्थान बदलने लगते हैं और शांति स्थानों में और
पलायन करते हैं। जैसे भारत - पाकिस्तान बंटवार,
जर्मनी एवं रूस में युद्ध आदि।
- 5- सामाजिक कारण - सामाजिक रिश्ते - रिवाज तथा परम्पराएं
भी उत्तरदायी होती हैं। जैसे विवाह के उपरान्त लड़कियां अपने
पति के घर चली जाती हैं, समुदाय परिवार में चलने के
कारण, बच्चों के शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए प्रवास करते हैं।
- 6- धार्मिक तथा सांस्कृतिक कारण
- 7- जनसांख्यिक कारण आदि।

जनसंख्या घनत्व स्पष्ट कीजिए
Explain the Density of population

किसी देश में निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या और सम्बन्धित देश के क्षेत्रफल के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहा जाता है। अन्य शब्दों में जनसंख्या घनत्व एक सरल अनुपात है जो किसी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या को उस क्षेत्र विशेष के क्षेत्रफल से भाग द देने पर प्राप्त होता है। वह जनसंख्या का घनत्व किसी क्षेत्र विशेष में जनसंख्या का दबाव का घेतक है। अर्थात् यदि किसी मोटर में रहने वाले जनसंख्या को जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

जनसंख्या घनत्व = $\frac{\text{समग्र क्षेत्र की जनसंख्या}}{\text{उस क्षेत्र का क्षेत्रफल}}$

$$\Delta p = \frac{p}{A}$$

जनसंख्या घनत्व को मनुष्य भूमि - अनुपात भी कहा जाता है। इसके द्वारा किसी भी देश, स्थान क्षेत्र पर मनुष्य के भार को ज्ञात किया जाता है। भारत में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बिहार है ४६६ ॥०६ व्यक्ति प्रति वर्ग किमी में रहते हैं जबकि भारत का जनसंख्या घनत्व २०११ के आँकड़ों के अनुसार ३८२ है। जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला भारत का राज्य अरुणाचल प्रदेश है। सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बिहार, पं० बंगाल, केरल, उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा प्रमुख राज्य हैं।

प्रजननशीलता का अर्थ

Mammals & Birds

सामान्य तः प्रजननशीलता का अर्थ किसी स्त्री या किसी समूह स्त्री द्वारा किसी समय विशेष में कुल से जीवित जन्मे बच्चों की वास्तविक संख्या से है। यदि किसी भी किसी स्त्री ने किसी बच्चे को जन्म दिया है तो उसको प्रजननशील स्त्री कहा जाता है। इस तरह प्रजननशीलता की माप किसी समय विशेष में जीवित जन्मे बच्चों की आवृत्ति से की जा सकती है।

प्रजननशीलता तथा सैन्तानोत्पादकता में अन्तर होता है। सैन्तानोत्पादकता शब्द से तात्पर्य किसी स्त्री में बच्चों को जन्म देने की शक्ति से है। यह उसने बच्चों को जन्म दिया हो अथवा न दिया हो। इस प्रकार वे स्त्रियाँ जिनमें सैन्तानोत्पादन शक्ति है उन्हें प्रजनन योग्य कहा जाता है। इसके विपरीत प्रजननशीलता से आशय वास्तव में बच्चों को जन्म देने से है। प्रजननशक्ति की तो जन्म के आकड़ों की सहायता से मापा जा सकता है। जे० चामस एवं लेविस के शब्दों में ८८ जनसंख्या विषय के अधिव्यंश विद्यार्थी प्रजननशीलता शब्द का प्रयोग स्त्री या समूह स्त्रियों के प्रसूति द्वारा जनित बच्चों की वास्तविक संख्या के लिए करते हैं। जबकि सैन्तानोत्पादकता बंद शारीरिक क्षमता होती है जिससे स्त्रियाँ गर्भाधारण के योग्य होती हैं। स्त्रियों में से कितनी प्रजनन के लिए सक्षम हैं और कितनी नहीं इसका निश्चित माप कर पाना कठिन है।

अशोधित मृत्यु दर (Crude Death Rate) CDR
 अशोधित मृत्यु दर, मृत्यु दर मापने की सबसे सरल
 और लोकप्रिय विधि है। यह किसी वर्ष विशेष में
 पंजीकृत हुई, मृत्युओं से सम्पूर्ण जनसंख्या के अनुपात
 को दर्शाती है, दूसरे शब्दों में किसी दिए हुई वर्ष के
 लिए अशोधित मृत्यु दर हमें यह बताती है कि उस
 वर्ष विशेष में होने वाली मृत्युओं में जनसंख्या का
 किस दर से कग बिचा है। इसे मृत्यु प्रति व्यक्ति
 प्रति वर्ष के द्वारा भी पुकारा जाता है लेकिन इसे
 प्रति हजार के रूप में व्यक्त किया जाता है।

अशोधित मृत्यु दर को प्राप्त करने के लिए किसी
 काल विशेष में हुई कुल मृत्युओं को मध्यवर्षीय
 जनसंख्या से भाग दे दिया जाता है। इस प्रकार प्राप्त
 अंकनफल को 1000 से गुणा करने पर जो राशि प्राप्ति
 होती है उसे अशोधित मृत्यु दर प्रति हजार कहा
 जाता है।

$$\text{अशोधित मृत्यु दर} = \frac{\text{कुल मृत्युओं की संख्या}}{\text{मध्यवर्षीय जनसंख्या}} \times 1000$$

$$CDR = \frac{CD}{CP} \times 1000$$

जे० डेविड एम. दीर ने कहा है कि इसे इस अनुपात के रूप
 में परिभाषित किया जा सकता है जो किसी दी हुई
 जनसंख्या में किसी वर्ष विशेष में हुई मृत्युओं तथा
 उसी वर्ष के मध्यवर्षीय जनसंख्या के बीच होता है।
 2023 में इस में भारत में अशोधित मृत्यु दर 6.4 है
 रही है। सर्वद्वितीय विश्व युद्ध में यह 8.9 जबकि कम दिवसी
 में 4.3 है।

मातृ मातृत्व मृत्यु दर (Maternal Mortality Rate) MMR

मातृत्व मृत्यु दर से आशय शिशु जन्म के कारण हुई स्त्रियों की मृत्यु दर से है। इसकी गणना के लिए शिशु जन्म के कारण होने वाली स्त्री मृत्यु की संख्या को कुल शिशु जनसंख्या को से विभाजित कर दिया जाता है।

मातृत्व मृत्यु दर = $\frac{\text{वर्षीय निश्चित वर्ष वसंत में प्रजनन योग्य आयु वर्ष की स्त्रियों की शिशु जन्म के कारण हुई मृत्यु की संख्या}}{\text{संख्या}}$

मातृत्व मृत्यु दर = $\frac{\text{संख्या}}{\text{MMR}}$

मातृ मृत्यु दर प्रति एक लाख जीवित जन्मों पर प्रसव के दौरान या गर्भ धारण होने के 42 दिनों के भीतर प्रसव के कारण मरने वाली माताओं (15 वर्ष से 49 वर्ष आयु की स्त्री) की संख्या को मातृ मृत्यु दर (MMR) कहा जाता है। 2019 के आंकड़े के अनुसार भारत में प्रति लाख जीवित जन्मों पर मातृ मृत्यु दर 93 है। अर्थात् एक लाख जीवित जन्मों पर 93 महिलाएं की मृत्यु हो जाती है।

मृत्यु के कारण स्पष्ट कीजिए या मरणशील के कारण :- Explain the causes of Death

21वीं शरी के इस युग में औषधि विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान ने नाप-नाप अनुसंधानों एवं अन्वेषणों के द्वारा कि विभिन्न प्रकार के जटिल रोगों के कारणों का पता लगा का उसके उसके उपचार का ब्यास जारी है। लेकिन मृत्यु के तब तक भी अनेक कारण है -

- 1- कुपोषण :- मृत्यु एवं अस्वस्थता का सबसे प्रमुख कारण कुपोषण है गरीबी एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देशों में कुपोषण की समस्या व्यापक विद्यमान है। इनमें 5 वर्ष के कम आयु के बच्चों की होने वाली मृत्यु में से लगभग 50% मृत्यु प्रोटीन की कमी से होती है। कुपोषण प्रायः गरीबी, भोजन सम्बन्धी आदतें, धार्मिक श्रद्धा, अज्ञानता आदि के कारण मानव कुपोषण का शिकार बन जाता है।
- 2- बीमारियाँ - कुपोषण के कारण शरीर अनेक बीमारियों का शिकार होता है जिससे जल्द ही मृत्यु के काल में चले जाते हैं। इनमें कैंसर, श्वसन, तृतीय बीमारी, मधुमेह, हिप्पा से मृत्यु आदि के कारण मृत्यु है।
- 3- पर्यावरण सम्बन्धी दशाएँ :- उसके अन्तर्गत आवास व्यवस्था, पेय पानी, वायु, मल विसर्जन, कीटाणुनाशक सम्बन्धी व्यवस्था के कारण अनेक रोग जनित होते हैं जैसे चैचक, टैजा, टी-बी, मालरा, मलेरिया, डेंग आदि।
- 4- चिकित्सा सुविधाओं का अभाव - आज के इस वैज्ञानिक युग में भी अनेक दुर्घटनाओं में उपचार का अभाव है 21-शताब्दी के लोगों में सभी भी चिकित्सा का अभाव बना हुआ है।
- 5- सामाजिक एवं आर्थिक कारण - किसी देश में सामाजिक एवं आर्थिक कारण जैसे गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, पक्षपात, विवाह पद्धति आदि विवाह आदि

जीवन प्रत्याशा का अर्थ या

जीवन : ~~प्रत्याशा~~ प्रत्याशा से आशय ।

Expected life expectancy

जन्म के समय किसी नवजात शिशु के जितने वर्ष तक जीवित रहने की उम्मीद की जाती है वह उस शिशु की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा कही जाती है। किसी देश में जीवन प्रत्याशा वहाँ के निवासियों की स्वास्थ्य पर धारा पर निर्भर करती है। जिन देशों में मृत्यु दर अधिक होती है वहाँ के निवासियों की जीवन प्रत्याशा बहुत ही कम होती है और जहाँ-जहाँ मृत्यु दर कम होती है वहाँ की जीवन प्रत्याशा बहुत बढ़ती जाती है। वर्तमान सत्राब्दी में प्रायः विश्व के बहुत से देशों में जीवन प्रत्याशा बढ़ी है। भारत में भी जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में क्रमशः वृद्धि हो रही है। भारत की जीवन प्रत्याशा वैश्विक औसत से 10 से कम है। जहाँ भारत में जीवन प्रत्याशा 69.65 वर्ष है जबकि पुरुष 68 वर्ष महिला 74 वर्ष तक है। 1981 में पुरुष जीवन प्रत्याशा 23 वर्ष जबकि महिला जीवन प्रत्याशा 25 वर्ष थी। 1911 में पुरुष 22.59 वर्ष जबकि महिला 23.71 वर्ष थी। 1911 के बाद भारत में जीवन प्रत्याशा में तेजी से वृद्धि हुई जो आज बड़ी हुई देती जाती है। लेकिन विश्व के मुकाबले भारत की जीवन प्रत्याशा आज भी बहुत कम है। यूरोप के अधिक देशों की जीवन प्रत्याशा 70 वर्ष से अधिक है।

जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक क्या हैं?

What are the major factors affecting population density?

जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कोई एक घटक नहीं है बल्कि अनेक ऐसे घटक हैं जो किसी देश की जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करती हैं।

1- अनुकूल जलवायु :- किसी देश की जनसंख्या की जलवायु तथा जनसंख्या घनत्व में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है और किसी स्थान की जलवायु स्वास्थ्यप्रद एवं अनुकूल होती है वहाँ जनसंख्या अधिक बसती है। अनुकूल जनसंख्या से जलवायु से अधिक व्यापारों के जीवन निर्वाह की समता पायी जाती है। प्रतिकूल जलवायु में वहाँ पर जनसंख्या का बसाव कम पाया जाता है।

2 वर्षा की मात्रा - जहाँ वर्षा उचित समय पर उचित मात्रा में होती है वहाँ पर खाद्यान्नों आदि की उत्पादन समता अधिक होती है और वे स्थान घनी आबादी वाले होते हैं। इसके विपरीत असामयिक वर्षा वाले स्थानों में खाद्यान्न उत्पादन में कठिनाई होती है जिससे जन बसाव कम पाया जाता है।

3- भूमि की प्राकृतिक बनावट - जो क्षेत्र पर्वतीय एवं घाटियों से भरा होता है वहाँ में मिट्टी ढ़ेबड़-खाबड़, जंगलों से ढ़की पतलीली तथा कम उपजाऊ होती है वहाँ जनघनत्व कम पाया जाता है। इसके विपरीत मैदानी एवं समतल क्षेत्रों में अधिक जन बसाव पाया जाता है।

4- जीवन एवं सम्पत्ति सुरक्षा - जहाँ पर उषः, जल-माल का तुल्यमान, शांति होता है वहाँ अधिक लोग बसते हैं। जहाँ पर सदैव असुरक्षा का भय वातावरण रहता है वहाँ पर लोग कम मात्रा में बसते हैं।

5- आर्थिक विकास :-

अशोधित जन्म दर (Crude Birth Rate) CBR
 यह जननरहिता की सबसे सटीक विधि है यह किसी
 वर्ष विशेष में जन्मे कुल बच्चों की संख्या तथा उस वर्ष
 की कुल जनसंख्या के मध्य अनुपात को व्यक्त करता
 है। प्रायः इसे प्रति हजार में व्यक्त किया जा सकता है।
 अशोधित जन्म दर को प्राप्त करने के निम्न सूत्र है -

$$\text{अशोधित जन्म दर} = \frac{\text{किसी वर्ष विशेष में किसी विशेष क्षेत्र में जन्मे बच्चों की संख्या}}{\text{उस वर्ष विशेष में क्षेत्र विशेष की कुल जनसंख्या}} \times 1000$$

$$CBR = \frac{B}{P} \times 1000$$

B = वर्ष विशेष में कुल जन्मे बच्चों की संख्या

P = उस वर्ष विशेष में क्षेत्र की कुल जनसंख्या

इसको अशोधित दर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी
 गणना करते समय किसी भी समुदाय की जनसंख्या के
 गठन अर्थात् आयु और लिंग आदि के अन्तरों को ध्यान में
 नहीं रखा जाता है। इसका सबसे अधिक प्रयोग वर्तमान
 जनन दर को अभिव्यक्त और उसका जनसंख्या वृद्धि
 पर उभाव देवने के लिए किया जाता है तथा यह भी
 अशोधित जन्म दर में से अशोधित मृत्यु दर को घटा दिया
 जाता है तो इससे जनसंख्या के विकास की दर में प्राप्त
 किया जा सकता है।

कुल प्रजनन दर से आप क्या समझते हैं,
Reproductive Fecundity Rate (TFR)

कुल प्रजनन दर या TFR बच्चों का वह संख्या है जो किसी भी स्त्री के सम्पूर्ण प्रजनन काल में उत्पन्न होते हैं। यदि किसी स्त्री के पूरे प्रजनन काल में कुल तीन बच्चे पैदा होते हैं तब उस स्त्री का कुल प्रजनन दर 3 है। इसी तरह यदि 1000 स्त्रियों के मध्ये उनके सम्पूर्ण प्रजनन काल में 12000 बच्चे पैदा होते हैं तो

$$TFR = \frac{12000}{1000} = 12 \text{ प्रति स्त्री हुआ}$$

TFR बच्चों का वह संख्या जो किसी भी स्त्री के सम्पूर्ण प्रजनन काल (15-45 वर्ष) में पैदा हो पाए, TFR का महत्व यह काम आये तो जनसंख्या के घटने की प्रवृत्ति होगी यदि TFR दो आये तो इसका अर्थ हुआ कि जनसंख्या में कोई भी वृद्धि नहीं होगी अर्थात् माता-पिता अपने आप को ही प्रतिस्थापित करते हैं। TFR के स्तर को प्रतिस्थापन प्रजनन दर कहते हैं।

मरणशीलता या मृत्युक्रम से आराम

Explain the Mortality

मृत्यु एक निश्चित घटित होने वाली महत्वपूर्ण जैविकीय घटना है जिसके अन्तर्गत जीवित जन्मे व्यक्ति विशेष में निहित जीवशास्त्रीय आसन्न शक्ति का अन्त हो जाता है। मृत्यु एक दीर्घकालीन जीवन व्यतीत करने के उपरान्त व्यक्ति विशेष में निहित जैविकीय शक्तों की समाप्ति का सूचक है। इसमें निरन्तर कार्यरत शरीर के आवश्यक अवयव कार्य करना बंद कर देते हैं। मृत्यु निश्चित एवं अडिग है चाहे विज्ञान कितना भी तरक्की कर ले वह कभी सन्ध नहीं हो सकता है। मृत्यु की सम्भावना प्रत्येक प्राण की में सदैव बनी रहती है सामान्य दशा में एक निश्चित आयु तक जीवित रहने की सम्भावना भिन्न-भिन्न देशों एवं समाजों में भिन्न-भिन्न होती है। यह किसी देश की आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों एवं जलवायु आदि पर निर्भर करती है। मृत्यु के बिना किसी भी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना सम्भव नहीं होता है क्योंकि यह जीवियों को परिवर्तित करती रहती है जो अपने अनुसार समाज में परिवर्तन लाते रहते हैं। जैसे ही किसी व्यक्ति के मृत्यु के बाद दूसरे के हाथ में सत्ता आती है वह अपनी पूर्व निहित अवधारणाओं एवं परिकल्पनाओं के आधार पर समाज में परिवर्तन का प्रयास करता है।

शिशु मृत्यु दर के कारण

Causes of Infant Mortality

शिशु मृत्यु दर के अनेक कारण हैं -

- 1- गरीबी - भारत में गरीबी शिशु मृत्यु दर का प्रमुख कारण है। गरीबी के कारण माता-पिता गरीब होने के कारण बच्चों को उचित पोषण देना असमर्थ हैं। इससे बच्चे शारीरिक रूप से अल्पविकसित हो जाते हैं। अतः पर अंध विश्वास के कारण जो दूध बच्चों के पुराने होने-बादिए उसे धर्म के नाम पर गंगा मा अम्बत बहा दिया जाता है। यदि इसे गरीब बच्चों में प्रति दिन मुक्त बांटा जाय तो नवजात बच्चों के विकास में अच्छी प्रतिक्रिया मिल सकती है।
- 2- प्रसव सम्बंधित कारण - कम आयु में विवाह और मातृत्व की अनजानता, कुशल देखभाल एवं जन्मा-बच्चा केन्द्र तथा प्रसव सुविधा का अभाव जिससे आने वाले नवजात के मृत्यु की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है।
- 3- शिशुओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी - ग्रामीण क्षेत्रों में शिशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव रहता है। शिशुओं के बीमारियों के टीकाकरण, स्वास्थ्य एवं सफाई का अभाव जो अशिक्षित होने के कारण शिशु मृत्यु की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है।
- 4- माता-पिता का अनजानता - उनमें अंध विश्वास एवं जादू टोना जैसे ~~कुत्ते~~ के बल से समाज में अंधांधली बीमारियों का फैलाव आड़-पूँव द्वारा करने का प्रयास करते हैं।
- 5- अव्यवस्थित मातृत्व - कम आयु में विवाह से सीधुभावा बनने या बार-बार में बनने से बीमारी आ जाती है।

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास

Population and Economic Development

किसी देश के राष्ट्रनिर्माण एवं आर्थिक विकास में वहां की जनसंख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही किसी देश के आर्थिक विकास उस देश की जनसंख्या पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार जनसंख्या तथा आर्थिक विकास के स्तर में प्रत्यक्ष एवं परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वल्येक देश का उत्पादन स्तर, आर्थिक विकास की दर, राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय, देश में उत्पादन क्रियाओं का संचालन, रहन सहन का स्तर आदि सभी दशाएं उस देश की जनसंख्या के आकार एवं वितरण पर निर्भर करती हैं। मानव ही वह शक्ति है जो प्राकृतिक संसाधनों को अपनी कृशालता, एवं औद्योगिक दशाल द्वारा अ गतिशील बनाता है। तथा विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

मार्क्स का कथन है कि आर्थिक विकास के सभी प्रयासों केन्द्र बिन्दु मानव विकास होता है तथा मनुष्य ही समस्त उत्पादन का कारण है। वह ही केवल उत्पादन का साधन है। प्रो० रीस्टोव के अनुसार "आर्थिक विकास एक ओर पूंजी व कार्यशील शक्ति में वृद्धि को देशों के मध्य और दूसरी तरफ जनसंख्या वृद्धि को दर के मध्य एक ऐसा सम्बन्ध है जिससे कि प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है।" मानव संसाधन आर्थिक विकास के संसाधनों की अपेक्षा अधिक महत्व है। आज ना-ना संसाधनों की खोज, गगनचुम्बी इमारतें, विशाल फैक्ट्री, पर्वतों का ट्रेडन, सागर, जलविद्युत बांध, सड़क पुल आदि का निर्माण मानव की कार्य कृशालता से ही हो रहा है।

जनसंख्या शिक्षा का आशय Meaning of Population Education

जनसंख्या शिक्षा अर्थात् जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न गम्भीर समस्याओं के संदर्भ में विस्तृत जानकारी, सौच तथा जागरूक उत्पन्न करती है। जनसंख्या शिक्षा से व्यक्ति स्वयं अपने परिवार, समाज, देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए अपने परिवार के आकार को व्यवस्थित एवं नियंत्रित करने के उद्देश्य जागरूक हो सकता है। बेलैनसन के अनुसार "जनसंख्या शिक्षा द्वारा जनसंख्या के विषय में जागरूकता व ज्ञान को विकसित किया जाता है साथ ही पारिवारिक जीवन, प्रजनन तथा मूलभूत मूल्यों का भी ज्ञान कराया जाता है।"

जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षणिक प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को जनसंख्या में वृद्धि के कारणों एवं इसके द्वारा उत्पन्न समस्याओं के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का व्यक्ति, समाज तथा देश पर पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान आगामी दशकों के प्रजनन को नियंत्रित किया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य देश की युवा पीढ़ी तथा भावी पीढ़ी को इस बात के लिए पहले से ही तैयार करना है कि वे अपने परिवार के आकार व संगठन के विषय में विवेकपूर्ण दृष्टि से निर्णय ले सकें। ऐसी शिक्षा भावी पीढ़ी को प्रजनन दर में कमी लाने हेतु प्रेरित करती है ताकि व्यक्ति, समाज तथा देश का जीवन स्तर ऊँचा रहे तथा देश का सर्वांगीण विकास हो सके।

सामान्य प्रजनन दर से आशय - General Fertility Rate GFR

सामान्य प्रजनन दर (GFR) कुल जीवित जन्मे बच्चों एवं सन्तानोत्पादन योग्य आयु की स्त्रियों की संख्या से सम्बन्धित है। इस दर की गणना का उद्देश्य गणना को केवल सन्तानोत्पादन योग्य स्त्रियों तक ही सीमित रखना है। अर्थात् गणना में समस्त पुरुषों को तथा स्त्रियों के उस भाग को जो सन्तानोत्पादन नहीं कर सकने वाली आयु में हैं को शामिल नहीं किया जाता है। सामान्य प्रजनन दर किसी वर्ष विशेष में कुल जीवित जन्मे बच्चों तथा सन्तानोत्पादन आयु वर्ग की प्रति हजार स्त्रियों का अनुपात होता है, जो यह दर्शाता है कि सन्तानोत्पादन का आयु वर्ग की स्त्रियों जीवित बच्चों को जन्म देकर किस प्रकार वर्तमान जनसंख्या में वृद्धि करती हैं।

WHO केन्जामिन के अनुसार "15-49 आयु वर्ग की प्रति हजार स्त्रियों द्वारा जन्मित जीवित जन्मों की संख्या ही सामान्य प्रजनन दर है।"

सामान्य प्रजनन दर =

साल विशेष में वर्ष भर में सजीव जन्मे बच्चों की संख्या
 इससे व विशेष में सन्तानोत्पादन आयु वर्ग की स्त्रियों की संख्या

$$GFR = \frac{B}{Fp}$$

सामान्य प्रजनन दर की गणना करते समय इस बात की जानकारी करना महत्वपूर्ण है कि स्त्रियों का प्रजनन काल क्या माना जाय इसके लिए अलग-अलग स्थानों के लिए अलग-अलग है कहीं 15-45 वर्ष तो कहीं 15-49 वर्ष है

भारत में जनसंख्या विस्फोट Population Explosion in India

भारत में जनसंख्या तेजी से बढ़ी हो रहा है जहाँ पर साधन जनसंख्या के भार को सहन करने में अपने को असमर्थ महसूस कर रहे हैं जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से भोजन, वस्त्र एवं आवास की समस्या विकराल होती चली जा रही है। भारत में जनसंख्या सम्बन्धी स्थिति वास्तव में भयानक है जहाँ 1901 में जनसंख्या 23.8 करोड़ थी वहीं 1951 में 36 करोड़ हो गया जबकि 1991 में यह जनसंख्या 84.6 करोड़ हो गयी जबकि 2001 में यह जनसंख्या बढ़कर 121.08 करोड़ हो गया 2025 में एफ डब्ल्यू के अनुसार विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या भारत की हो गयी जिसकी आबादी 140 करोड़ पहुँच चुकी है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि दर वास्तव में समझनी पड़ेगी कर देती है। यहाँ जनसंख्या की वृद्धि दर भारत के अपने जनानुसूची इतिहास के लिए भी भयानक और सम्भव है। 2001 से 2011 के बीच भारत में 18.48 करोड़ जनसंख्या वृद्धि हुई है भारत की औसत विश्व की औसत की भाव 2.4% है जबकि जनसंख्या में 17.5% है। भारत की जनसंख्या समुच्च राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, जापान, पाकिस्तान, बेल्जियम एवं जापान की समुच्च जनसंख्या से अधिक है। आजादी से पूर्व तक भारत की जनसंख्या 50 वर्षों में 12.3 करोड़ हो गयी थी जबकि 1951 से 2001 के बीच इन 50 वर्षों 66 करोड़ की वृद्धि देखी गयी इस प्रकार भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या विस्फोट की वरत चुकी है।

माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त Malthusian theory of population

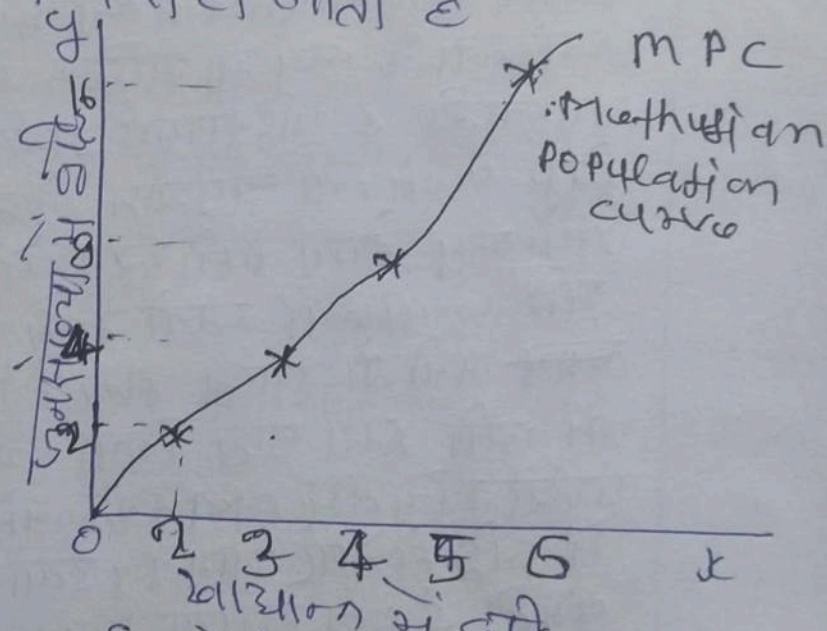
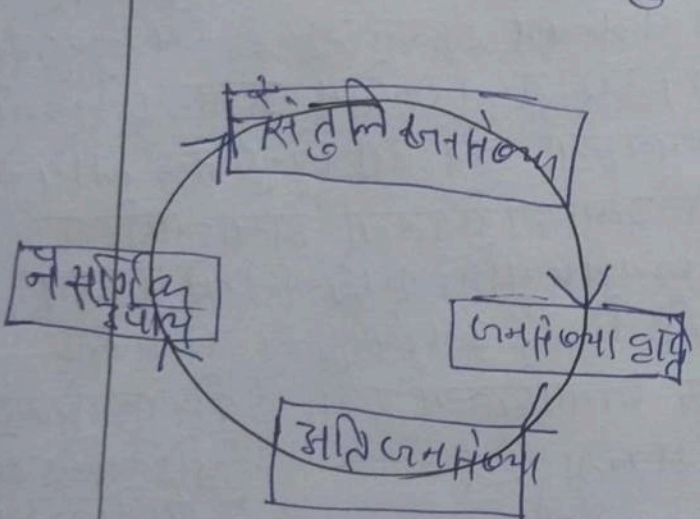
माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त, जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्यान्न आपूर्ति में वृद्धि के मध्य सम्बन्ध की व्याख्या करता है। इस सिद्धान्त का कथन है कि जनसंख्या में जीवन निर्वाह साधनों की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है। यह सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि खाद्यान्न वृद्धि की अपेक्षा जनसंख्या में अधिक तेजी से वृद्धि होती है और यदि इस जनसंख्या वृद्धि पर रोक न लगायी गयी तो परिणामस्वरूप विपत्ति उत्पन्न हो जाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर पर भी नियन्त्रण नहीं लगाया गया तो जनसंख्या खाद्य पदार्थों की वृद्धि की तुलना अधिक तीव्र बढ़ती है और प्रत्येक 25 वर्ष बाद पहले से दुनी हो जाती है। और वृद्धि गुणोत्तरात्मक जमिनीय क्षेत्रों में बढ़ती है जैसे 1, 2, 6, 8, 16, 32 आदि क्रम में जनसंख्या बढ़ती है। जबकि खाद्यान्नों की वृद्धि में वृद्धि दर अंकगणितीय आधार पर जैसे 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 आदि के क्रम में बढ़ती है।

माल्थस ने बताया कि उकृति सीमित लोगों के लिए भोजन लगाया है जो बिना बुलाये आयेगा उसे तिरस्कृत हो भ्रमण भरना पड़ेगा। इसके जनसंख्या नियन्त्रण का सुझाव दिया जाता है। इसे उकृति प्रत्येक जैसे भुजमरी, अकाल, भूक, बीमारी, बाढ़, भूकम्प जैसे बचने के लिए मनुष्य को स्वयं आगे जाना होगा।

जनसंख्या तथा वाद्य सामग्री में असंतुलन

जनसंख्या की अपेक्षाकृत तेज वृद्धि के कारण जनसंख्या तथा वाद्यान्वों की वृद्धि में असंतुलन पैदा हो जाता है जनसंख्या का वाद्यान्वों की वृद्धि के रूप में अधिक आगे जनसंख्या का वृद्धि है माल्थुस के अनुसार ऐसी असंतुलन की स्थिति में प्रकृति स्वयं कुछ नैसर्गिक प्रतिकूल प्रतिक्रिया जैसे भूख, महामारी, भूकम्प, बाढ़, आकाल आदि लगा देती है इससे जनसंख्या में कमी आ जाती है तथा वाद्यान्वों के साथ संतुलन स्थापित कर लेती है लेकिन यह संतुलन स्थायी नहीं है इससे मानव को अत्यन्त दुःख है जो जनसंख्या नियंत्रण नहीं है लेकिन जनसंख्या तब पर भी पुनः वृद्धि होने लगती है जो पुनः से असंतुलन पैदा हो जाता है



प्रदर्शित चित्र में MPC प्रदर्शित है कि जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती जाती है जो माल्थुसियन चक्र बंद होता है जहाँ जनसंख्या में वृद्धि → अतिजनसंख्या → नैसर्गिक उपाय → संतुलित जनसंख्या प्राप्त हो जाती है।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त Theory of optimum population

अनुकूलतम जनसंख्या से आशय उस जनसंख्या से है जो किसी देश में एक निश्चित समय पर दिये हुए साधनों का अधिकतम उपयोग तथा उत्पादन के लिए आवश्यक है जब देश की जनसंख्या का आकार आदर्श (optimum) रहता है तो प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है। इस प्रकार एक विशेष समय तथा परिस्थितियों में वही जनसंख्या सर्वोत्तम होता है जिसमें प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है।

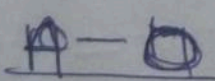
प्रो० डाक्टर के अनुसार 'अनुकूलतम जनसंख्या वह होती है जो प्रति व्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करती है।'

एडविन केनन के अनुसार किसी देश में एक दिये हुए समय पर अधिकतम उत्पादन का एक बिन्दु आता है जहाँ बहुत बड़ा जनसंख्या तथा साधनों का पूर्ण समन्वय हो जाता है इस बिन्दु से जनसंख्या के कम या अधिक होने पर कुल राष्ट्रीय उत्पादन में कमी आ जाती है यदि सम्पूर्ण सन्ध व्यवस्था को उस बिन्दु तक लाने के लिए जनसंख्या अप्रयत्न हो तो उत्पादन घटने लगता-चाहिए।

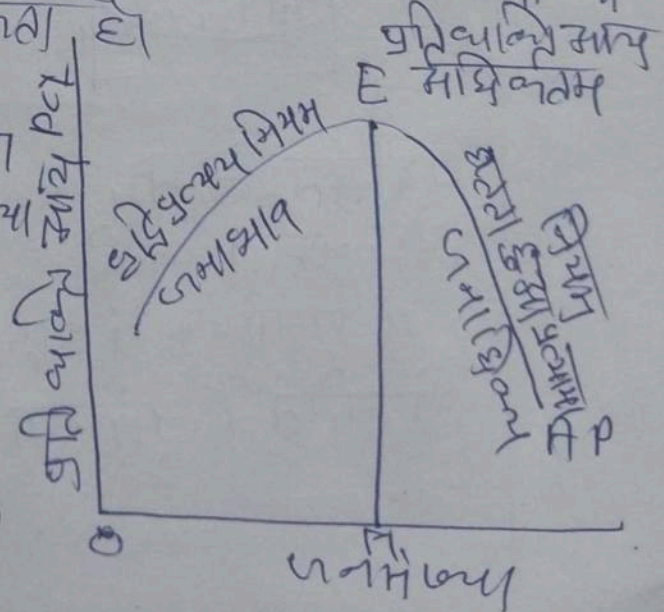
अतः कम होगा ऐसी दशा में जनसंख्या में बढ़ी जानी पड़ेगी यदि जनसंख्या इतनी अधिक है कि वह उस बिन्दु से आगे बढ़ जायगी तो इसका अर्थ है कि जनसंख्या दशा है इसे जनसंख्या में कमी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रदर्शित चित्र में ० जनसंख्या पर प्रति व्यक्ति आय पर

में बढ़ी होने पर आय एवं उत्पादन बढ़ती है ०। अनुकूलतम जनसंख्या में है बिन्दु के बाद जनसंख्या में रोक लगायी-चाहिए।

12 

12 = धनात्मक जनसंख्या बढ़ती है
12 = ऋणात्मक न्यून जनसंख्या
12 = अनुकूलतम जनसंख्या



जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धान्त Theory of Demographic Transition

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन C.P टॉलेयर नामक वैज्ञानिक ने। इसका मत था कि प्रत्येक समाज में जनसंख्या में अनेक अवस्थाओं से जाना पड़ता है प्रथम जनसंख्या प्रत्येक देश जनसंख्या दृष्टि से दोहरे से तीन अवस्था से होकर गुजरता है जबकि C.P टॉलेयर पांच अवस्था बतायी है।

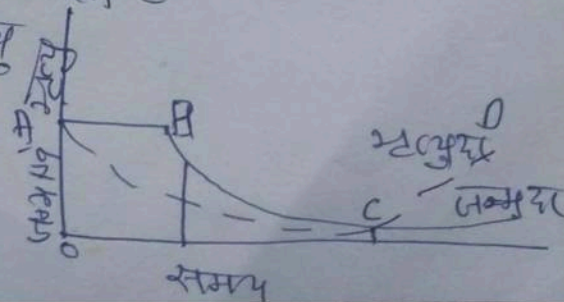
प्रथम अवस्था :- इसमें जन्म दर प्रमुख या बेनोमैची होती है जन्मसंख्या जनसंख्या दृष्टि से नीची होती है इस अवस्था में कृषि आय का मुख्य स्रोत होता है उद्योग का अभाव रहता है सेवा क्षेत्र का अभाव रहता है कच्चे परिवार के सम्पत्ति समझे जाते हैं।

2- दूसरी अवस्था - कृषि क्षेत्र से औद्योगिक विकास होने लगता है आय, उपभोग का स्तर, रहन-सहन का स्तर, शिक्षा, चिकित्सा में दृष्टि होती है जिनमें मृत्यु दर कम होती है। जनसंख्या निरन्तर से दृष्टि के कारण जनसंख्या विस्फोट पाया जाता है।

3- तीसरी अवस्था - यह अवस्था जन्म दर घट जाती है और मृत्यु दर के पास पहुँच जाते हैं जनसंख्या दृष्टि से गिर जाती है लोगो में आय में दृष्टि होती है शिक्षा का प्रसार एवं रहन सहन का स्तर में दृष्टि, संघविश्वास टूट जाता है छोटे-छोटे परिवार होते हैं विवाह की आयु बढ़ने लगती है C.P टॉलेयर ने पांच अवस्था बताया है।

- A - उच्च स्थिति अवस्था - जन्म दर - मृत्यु दर में
- B प्रारम्भिक विस्तार अवस्था - उच्च जन्म दर घटती मृत्यु दर जनसंख्या विस्फोट
- C विलम्बित विस्तार अवस्था - मृत्यु दर के घटने के साथ जन्म दर घटने लगती है पर जन्म दर अधिक रहता है जनसंख्या विस्फोट है
- D नीची स्थिति अवस्था - मृत्यु दर घटनमय हो जाता है
- E घटती अवस्था जन्म दर घटते-घटते मृत्यु दर से कम हो जाती है

- i A → उच्च स्थिति
- ii A-B = प्रारम्भिक विस्तार अवस्था
- iii B-C = विलम्बित विस्तार अवस्था
- iv C नीचे स्थिति अवस्था
- v C-D घटती अवस्था



जनसंख्या, गरीबी एवं परिवार संकट

जनसंख्या, गरीबी और परिवार द्वारा का निम्न सम्बन्ध होता है। जनसंख्या वृद्धि के कारणों में गरीबी भी एक है। प्रायः गरीबी के बच्चे अधिक होते हैं और उनके परिवार का आकार बड़ा होता है। गरीबी में बच्चे परिवार की आय में वृद्धि के साधन बनते हैं। अतः उनका परिवार पर भार महसूस नहीं किया जाता। गरीबी में रदनराष्ट्र का स्तर अत्यन्त निम्न होता है। शिक्षा की कमी, मनोरंजन का अभाव पाया जाता है। यह के तरीकों एवं सामाजिक पायाओं से बंधे रहते हैं। निर्दिष्ट निर्धनता का एक बड़ा भाग गोबो रहता है। जहाँ पृथ्वी के बेरोजगारी पायी जाती है। गरीबी में जनसंख्या वृद्धि के समस्त सामाजिक एवं आर्थिक कारण विद्यमान रहते हैं।

बढ़ती जनसंख्या परिवार की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। जनसंख्या वृद्धि से विस्तृत जेनी के बच्चा देती है। इससे वन विनाश को बढ़ावा मिलता है। परती भूमि पर तब तक जल संग्रहण के सेतो के भी कुछ के कार्य में लगाया जाता है। विश्व बैंक के एक रिपोर्ट के अनुसार निम्न आय वाले देशों में 65% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इनका निर्वाह जंगलों, पेड़-पौधों, तथा पशुओं पर सीधे निर्भर करता है। जो परिवार के संरक्षण पर ध्यान नहीं देते हैं। ग्रामीण जनघनत्व परिवार घनत्व के व्यापक सारि पहुँचाती है। मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले भूमिहीन ग्रामीण, गरीब व अन्य लोग वनों की क्षति पहुँचाते हैं।

मानव संसाधन (Human Resource)

किसी भी देश के आर्थिक विकास में मानव संसाधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव संसाधन से लोगों की संख्या और योग्यता, शिक्षण, परीक्षण, कौशल सुव्यवस्थापन से लगाया जाता है। आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों तथा पूंजी की मात्रा की विशेष महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फिर भी यह आर्थिक विकास के निर्णायक साधन हैं। मानव ही वह शक्ति है जो इन संसाधनों की अपनी कुशलता तथा बौद्धिक क्षमता द्वारा वांछित दिशा में अतिरिक्त कर इनका कुशलतम उपयोग करती है तथा विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। आर्थिक विकास के लिए मानव संसाधन प्राकृतिक संसाधनों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

आर्थिक विकास प्राकृतिक संसाधनों, पूंजी की मात्रा, तकनीकी ज्ञान तथा अम शक्ति पर निर्भर करता है। आर्थिक विकास के निर्धारक घटकों में अम शक्ति सबसे महत्वपूर्ण एवं सक्रिय घटक है। साइमन कुपनेट्स का कथन है कि "अन्य बातों के मर्यादित रहने पर जनसंख्या की प्रत्येक इकाई अम शक्ति को बढ़ाती है।" हां इसका अम शक्ति के लिए निश्चित योगदान इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या जनसंख्या इकाई मृत्यु दर गिरने के कारण अथवा शुद्ध देशान्तरण के कारण या जन्य दर में वृद्धि के फलस्वरूप हुई है।"

जीवन तालिका (Life-Table)

जनांकिकीय प्रमाणों के उपलब्ध तकनीकों में जीवन तालिका सर्वाधिक व्यापक एवं प्रभावशाली मानी जाती है। इस सांख्यिकीय विधि की सहायता से किसी समूह की जनसंख्या की औसत आयु एवं मृत्यु की सम्भावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है। जीवन तालिका इन लोगों के जीवन का इतिहास है जिन्होंने कि एक निश्चित संख्या में लेकर जीवन तालिका में तब तक अध्ययन करते हैं जब तक कि एक भी व्यक्ति जीवित रहता है। अन्यथा सब व्यक्ति मर नहीं जाते। अन्वेषणों में जीवन तालिका के अन्तर्गत विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों के जीवित रहने तथा उनकी मृत्यु की सम्भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

बर्कले के अनुसार "जीवन तालिका एक काल्पनिक समूह अन्यथा सहस्रों का जीवन इतिहास है जो मृत्यु के कारण शून्य शून्य घटता जाता है और तब तक चलता रहता है जब तक कि एक भी व्यक्ति जीवित रहता है।" जीवन तालिका किसी विशिष्ट जनसंख्या में व्यक्तियों की सम्भावित जीवन अवधि तथा इसकी मृत्यु की सम्भावित आयु दरानों के लिए की गयी उपदेष्टापरक जनांकिकीय तालिका है। इस तरह से जीवन तालिका किसी काल्पनिक जनसंख्या या जनसमूह जिसका आयु समूह में वितरित आयु-विशिष्ट मृत्युदरों के अनुसार घटता जाता है का जीवन इतिहास है।

जीवन - तालिका का उपयोग (Use of Life-Tables)

व्यवहारिक जीवन में जीवन तालिका के अनेक उपयोग हैं और इसी उपयोगिता के कारण जीवन तालिका का जनोक्ति के अध्ययन में महत्व बढ़ता जा रहा है।

- 1 - **जन्म के समय जीवन प्रत्याशा** - इसकी सहायता से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि एक जीवित जन्मे शिशु की औसत रूप से कितने वर्ष तक जीवित रहने की सम्भावना है। इससे जीवन प्रत्याशा की माप की जाती है। हमें किसी देश के लोगों का वृद्ध-सहन के स्तर तथा उस देश के स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रकाश डालता है।
- 2 - **प्रजननरहितता का अध्ययन** - इससे प्रजननरहितता का अध्ययन किया जाता है। हमें विवाहित स्त्रियों की कई उपवर्गों में विभाजित कर दिया जाता है।
- 3 - **जीवन बीमा का महत्व** - जीवन बीमा व्यवसाय में जीवन तालिका का बहुत महत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी सहायता से प्राप्त जानकारी विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों की जीवन प्रत्याशा कितनी है।
- 4 - **जनसंख्या प्रक्षेपण में महत्व** - इसकी सहायता से इस बात की जानकारी प्राप्त हो सकती है कि प्रजनन आयु वर्ग की महिलाओं का उत्प्रेरणा किस प्रकार हो रहा है तथा एक ही दूरि प्रजनन रीति के आधार पर जनसंख्या किस दर से बढ़ेगी।
- 5 - **मृत्यु क्रम का प्रभाव** - जीवन तालिका का उपयोग दो जनसंख्याओं में मृत्यु स्थिति की तुलना करने और उसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।
- 6 - **जीति निर्माण में सहायक** - इससे कुछ प्रजनन दर, भविष्य में अम शाकी, विधवाओं एवं विधुरों की संख्या, अनाथों की संख्या स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या, अशोधित मृत्यु दर तथा प्रवास आदि का अनुमान लगाया जा सकता है।

भारत की जनसंख्या नीति Population Policy in India

जनसंख्या नीति के माध्यम से किसी देश में जनसंख्या नियोजन किया जाता है। जनसंख्या नियोजन की सफलता जनसंख्या नीति की उपयुक्तता एवं उसके कुशल क्रियान्वयन पर निर्भर करता है। जनसंख्या नीति का व्यापक अर्थ में जनसंख्या के परिमाणत्मक एवं गुणात्मक दोनों पहलुओं पर अध्ययन किया जाता है। परिमाणत्मक पहलु के अन्तर्गत जनसंख्या के आकार एवं संरचना को इस प्रकार आवश्यकता अनुसार नियंत्रित किया जाता है ताकि राष्ट्रीय साधनों के साथ जनसंख्या का संतुलन हो सके। गुणात्मक पहलु से आशय है - जनता के स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा शिक्षा प्रवासी प्रवृत्ति आदि में सुधार लाना।

भारतीय नियोजन के आरम्भिक वर्षों में ही जनसंख्या नीति की शुरुआत हो चुकी थी लेकिन आरम्भिक वर्षों में जनसंख्या समस्या को कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया गया तीसरी पंचवर्षीय योजना में जनसंख्या में विस्फोट रोकने के कारण जनसंख्या नियंत्रण के लिए प्रभावी नीति का अनुसरण किया गया चौथी योजना में परिवार नियोजन कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी पांचवी योजना में आपातकाल के दौरान 16 अप्रैल 1976 को राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा किया गया आपातकाल के दौरान घोषित जनसंख्या नीति में राज्य सरकारों को मदद मिली दी गयी कि यदि वे चाहे तो अनिवार्य वन्द्याकरण के लिए कानून बना सकती हैं। 1976 में इसे स्वच्छ से घोषित किया गया।

जनॉकिकीय लाभांश से आशय [Explaining the Demographic Dividend]

जनॉकिकीय लाभांश से आशय कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या की बहुलांश में मौजूदगी जनॉकिकीय लाभांश की स्थिति कहलाती है। IMF के अनुसार 15-64 वर्ष की आयु सीमा के चायेर में आने वाले हिस्से को कार्यशील जनसंख्या कहा जाता है। आर्थिक समीक्षा 2012-13 कार्यशील जनसंख्या के चायेर में 15-59 की आयु सीमा में आने वाले लोगों की संख्या प्रदान करती है। जनॉकिकीय लाभांश की स्थिति निर्भरता अनुपात में कमी की ओर ले जाती है और ऐसी स्थिति बेहतर उत्पादन में वृद्धि की सम्भावना पैदा करती है।

जनॉकिकीय लाभांश का सम्बन्ध जनॉकिकीय संक्रमण की विशेष अवस्था से होता है जिससे कभी न कभी हर देश को गुजरना होता है। जनॉकिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था में उच्च जन्म दर निम्न मृत्यु दर की स्थिति जनॉकिकीय लाभांश की ओर ले जाती है। अधिक कार्यशील जनसंख्या होने से अधिक कृषिक, अधिक आय, अधिक बचत, पुर्ण कृषिक अधिक पूँजी और अधिक समृद्धि यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि जनॉकिकीय उत्पादक वर्ग में वृद्धि होती है। वैश्विक जनॉकिकीय सम्मान के इतिहास में 2016 का वर्ष महत्वपूर्ण था क्योंकि पहली बार उन्नत देशों के कार्यशील जनसंख्या (15-59 वर्ष) में गिरावट की स्थिति दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि अगली तीस दशकों के दौरान चीन एवं रूस की कार्यशील जनसंख्या 20% गिरावट की सम्भावना है। इस दशक में भारत में कार्यशील जनसंख्या $\frac{1}{3}$ की वृद्धि होगी।

जनोन्मुखीय लाभोन्मुखीय अवसर या चुनौती

जनोन्मुखीय लाभोन्मुखीय अवसर या है और चुनौती भी।
यदि बढ़ती हुई जनसंख्या की कार्यशील समूह की
बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधा तक पहुंच सुनिश्चित
करते हैं तो इसकी विकसित शारीरिक और मानसिक
समर्थता इसे उत्पादन के लिए कहीं अधिक सक्षम बनाएगी।
यदि इसे बेहतर कौशल और प्रशिक्षण से लैस किया जाता है
तो यह इसकी हर उत्पादकता में वृद्धि के लिए उत्प्रेरक का
कारण बनती है लेकिन इन सब का लाभ अर्थव्यवस्था को
तभी मिल पायेगा जब हम इनके लिए बेहतर प्रथम उत्पादकता
वाले रोजगार के अवसर सृजन पर्याप्त एवं समुचित मात्रा में
करते हैं अन्यथा जनोन्मुखीय लाभोन्मुखीय द्वारा सृजित सम्भावनाओं
का फायदा करते हुए इसका लाभ उठाना मुश्किल होगा।
इसरी बात जनोन्मुखीय लाभोन्मुखीय की स्थिति वर्तमान के लिए
अवसर है और भविष्य के लिए चुनौती। कारण यह है कि
कोई भी देश हमेशा जनोन्मुखीय लाभोन्मुखीय की स्थिति में
नहीं बना रह सकता है उसे जनोन्मुखीय लाभोन्मुखीय की स्थिति
में परिवर्तित होती चुनौती है भी घुसना पड़ता है, विशेषकर
तब जब जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट जनसंख्या वृद्धि दर
को प्रतिस्थापित दर पर और बढ़ती हुई जीवन प्रत्याशा
दुर्गुणों की बढ़ती आवृत्ति की और ले जाय। आर्थिक
समीक्षा 2012-13 इस बात का उल्लेख करता है कि जनोन्मुखीय
लाभोन्मुखीय की समृद्धि में अत्यंत सीमित भूमिका होती है।

जनाधिकारीय समंको का महत्व (Importance of Democratic Govt)

जनाधिकारीय समंको सोलियी आ सबसे प्राचीनतम रूप हैं संसार के सभी देशों में जनसंख्या - समंको का संकलन अति प्राचीन काल से किया जा रहा है प्रारम्भ में इस समंको का संकलन अधिकतर राजनीतिक उद्देश्य हेतु किया जाता था लेकिन वर्तमान युग में इसके सर्वांगीण उपयोगिता एवं महत्व है।

1- सामाजिक महत्व - सामाजिक दृष्टि से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक संरचनाओं, रीति रिवाजों और समस्याओं के चर्चण के रूप में कार्य करता है धर्म, जाति, पेशा, बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा, निरक्षरता, बाल विवाह, आदि सभी विषयों पर समंको जानकारी देता है और इनके सुधार में सहायक होता है।

2- आर्थिक महत्व - जनसंख्या समंको आर्थिक नीतियों के निर्धारण के प्रमुख आधार है विशेष रूप से किसी अर्थव्यवस्था के औपनायक विकास की सफलता का सारा दायरे मयार वास्तविक जनसंख्या समंको की निरंतरता, उपलब्धता पर निर्भर करता है इसमें जायगीति, रोजगार नीति, परिवार नियोजन, शहरीकरण, औद्योगिकरण, स्त्रीकरण और वास्तविक संतुलन आदि में सहायक होता है।

3- राजनीतिक महत्व - जनाधिकारीय समंको का विशेष महत्व है चुनाव हेतु निर्वाचन क्षेत्रों का सीमांकन SC, ST तथा OBC का संरक्षण एवं प्रतिनिधित्व सम्बन्धी आकड़े, एवं प्रशासन में भागीदारी, केन्द्र राज्य के बीच कर वित्तवारा, नगरीय सेवा विस्तार एवं निर्माण कार्य आदि समंको की सहायता से ही कार्य सम्भव होता है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000

National Population Policy, 2000

भारत की नई जनसंख्या नीति की घोषणा 15 फरवरी, 2000 को की गयी थी। उल्लेखनीय है कि नई नीति की घोषणा के लगभग तीन माह बाद 11 मई 2000 को भारत की जनसंख्या 1 अरब के मानके को पार कर गयी थी। भारत में सर्वप्रथम जनसंख्या बमाने का सुझाव 1960 में दिया गया था। 1976 में देश की पहली बार जनसंख्या नीति की घोषणा की गयी। इसके 1978 संशोधित जनसंख्या नीति की घोषणा भी गयी थी। 2000 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के प्रमुख बिन्दु हैं -

- 1- वर्ष 2045 तक (और 2020 तक) जनसंख्या वृद्धि दर को स्थिर करना।
- 2- विवाह की उम्र लड़कियों के मामले में 18 वर्ष तथा लड़के के लिए 21 वर्ष होगी। गरीबी रेखा से निचे जीवनमान बढ़ाने वाले उपक्रमों को प्रोत्साहित किया जायेगा जिनकी पहली संतान 21 वर्ष बाद या इसके अधिक होगी।
- 3- कुल प्रजनन दर वर्ष 2010 तक 2.1 करना था।
- 4- बाल विवाह निरोधक, मध्याभिन्न तथा लिंग परीक्षण के प्रावधान को साख्ती से लागू करना।
- 5- 14 वर्ष तक की आयु वाले बच्चों की स्कूली शिक्षा को अनिवार्य एवं निशुल्क बनाना।
- 6- विवाह, गर्भावस्था तथा जनम मृत्यु पंजीकरण में अनिवार्य बनाया जाना।
- 7- मातृत्व मृत्यु दर को प्रति एक लाख पर 100 से नीचे के स्तर पर लाना।
- 8- शिशु मृत्यु दर को प्रति हजार पर 30 से नीचे लाना।
- 9- 80% प्रसव अस्पतालों, नर्सिंग होमों और 100% प्राथमिक स्तरों से प्रसव कराना।
- 10- गर्भ निरोध के विभिन्न विकल्प उपलब्ध कराना।

भारत में जनोबिबी संक्रमण का अर्थ

भारत जनोबिबी संक्रमण के चार विस्तृत चरणों में से चौथे चरण का शुरू है। 1921 ई० तक भारत पूर्ण औद्योगिक कृषि प्रधान समाज रहा था जिसमें जनसंख्या का एवं मृत्यु का दोनों के उच्च रहने के कारण जनसंख्या बढ़ी पर अत्यन्त निम्न रही। उस समय तक भारत जनोबिबी संक्रमण के प्रथम अवस्था में था। 1921 से 1951 ई० तक जनसंख्या पहले जैसा लगभग बनी रही एवं उसमें कम गिरावट दर्ज की गयी लेकिन अकाल व संक्रमण रोगों पर नियन्त्रण होने व परिणामस्वरूप मृत्यु दर में काफी आने के कारण जनसंख्या में बढ़ी का अत्यधिक तीव्र रही। वस्तुतः 1961 के बाद से जनसंख्या में चौड़ा ह्रास देखा गया था लेकिन वास्तविक बढ़ी दर 2% से अधिक ही थी।

वर्ष 1951 के बाद पहली बार वास्तविक जनसंख्या बढ़ी दर 2% से कम हुई है। 1951 ई० के बाद भारत जनोबिबी संक्रमण के तीसरे चरण में प्रवेश कर चुका है एवं प्राकृतिक बढ़ी दर में गिरावट भी प्रवृत्ति शुरू हुई है। ऐसा माना जा रहा है कि वर्तमान जनसंख्या ह्रास प्रवृत्ति के रहने से भारत 2021 तक ही जनोबिबी संक्रमण के चौथे चरण में पहुँच जायेगा लेकिन 2021 के आकड़े के अनुसार भारत की जनसंख्या बढ़ी तीव्र गति से बढ़ी है लेकिन बढ़ी दर से हुई बढ़ी जनसंख्या में हुई काफी का प्रमुख कारण रहा है।

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त का प्रभाव

माल्थस के सिद्धान्त का तत्कालीन आलोचना के बाद भी पूरी दुनिया में माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त का प्रभाव पड़ा सभी विकसित एवं सभ्य देशों को किसी न किसी रूप में समर्थन प्राप्त है माल्थस के सिद्धान्त के 200 वर्ष बीत जाने के बाद भी उनके सिद्धान्त का आकर्षण कम नहीं हुआ। माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त एवं उसके चेतावनी का ही प्रभाव रहा है कि पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अफ्रीका देशों को भी जनसंख्या में सामना नहीं करना पड़ा इन देशों के लिए यह जीवन का एक संकेत अंग बन गया है जो संयम आदि के मार्ग पर मुचलकर सन्तान निगूह के अन्य उपायों को अपना रहे हैं।

माल्थस ने अफ्रीका के दुर्गुणों से चकरा कर लोगों को इस तरह सोचने को बाध्य कर दिया। और उसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने जनसंख्या नियन्त्रण के तरीके अपनाने शुरू कर दिए। लोगों ने वही संख्या में कृत्रिम अवरोध जैसे दूर से विवाह करना, गर्भ निरोधक प्रयोग आदि। जो 18 से म्युलसन के अनुसार "माल्थस का सिद्धान्त आज भी एक जीवित सत्य है। माल्थस का सिद्धान्त प्रत्यक्ष तथ्य से उत्पत्ति हुआ नियम पर आधारित है और इसमें आज भी सत्यता है।"

भारत में माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त लागू है जहाँ जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है जो 1951 में जनसंख्या 36 करोड़ थी जो 2011 में बढ़कर 121.08 करोड़ हो गयी, भारत में आज भी सामाजिक तथा धार्मिक दशा में जन्म दर बढ़ाने में सहायक है। जहाँ देश का एक तिहाई भाग आज भी अशिक्षित है जो जन्म दर रोकने में असफल है। देश में जीवन स्तर अत्यन्त निम्न स्तर पर है बेरोजगारी गरीबी, भुखमरी, कुपोषण आदि बढ़ रही है। देश में अभाव है लेकिन 25% लोगो के पास ज़रिये का क़य आया नहीं है।

① सतत विकास : धारणीय विकास, संपोषणीय और निर्वहणीय विकास

Sustainable Development

सतत विकास को अंग्रेजी के दो शब्दों Sustainable + Development से निकलकर बना है। Sustainable का अर्थ है सम्भावना या पोषित करना है। Development का अर्थ विकास या जीवन की गुणवत्ता में सुधार। सतत विकास की अवधारणा की शुरुआत 1962 में हुई जब वैज्ञानिक रॉकल कारसन ने दो 'साइलेंट स्प्रिंग' नामक पुस्तक लिखी। सतत विकास का अर्थ आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण को सुरक्षित करना इसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित रखना है। सतत विकास की अवधारणा आर्थिक विकास की नीतियों को पर्यावरण के अनुरूप बनाने पर जोर देती है तथा पर्यावरण के विरुद्ध चलने वाली विकास नीतियों में बदलाव लाता है।

ब्रिटिश आयोग ने अपनी रिपोर्ट (Our Common Future) 1987 में दो बिंदुओं में कहा कि "सतत विकास वह विकास है जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरित करता हो तो उसे सतत विकास कहा जाता है।" इस रिपोर्ट में कहा गया कि विकास इहमारी आज की जरूरतों को पूरा करें साथ ही साथ आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों को भी अनदेखी न करें। सतत विकास प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, इर्जा, कचरे का निस्तारण, परिवहन के प्रबंध को प्रोत्साहन देता है।

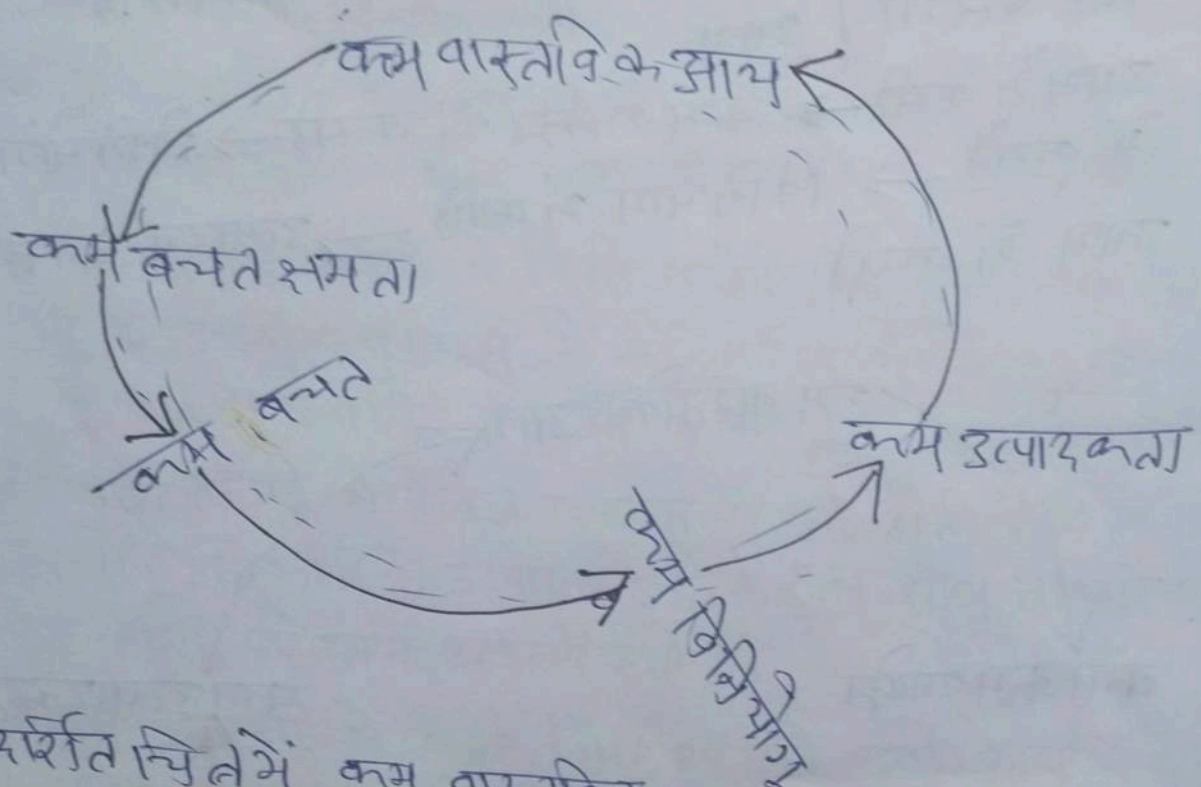
गरीबी का कुचक्र सिद्धान्त (10)

अल्पविकसित देश गरीबी की भँवर (Vortex) में फँसे हुए हैं, जिससे सामान्यतया गरीबी के कुचक्र के रूप में जाना जाता है। जिससे गरीबी पुनः गरीबी को जन्म देती है। प्रो० नक्स के शब्दों में गरीबी के कुचक्र से आशय नक्षत्रमंडल के समान शाकीयों का उस प्रकार से घूमना है कि वे परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया करती हुई निर्धन देश को सदैव निर्धनता की अवस्था में बनाये रखे तथा उन्हीं सम्पूर्ण परिस्थिति को उस प्रकार व्यक्त किया एक देश गरीब है क्योंकि वहाँ गरीब हैं। यदि कोई देश गरीब होगा तो उसके पास आय कम होगी, लोगों का उपभोग स्तर नीचा होगा, कार्य करने वाली जनसंख्या को न तो ठीक से पाना मिलेगा न ही उचित शिक्षा का व्यवस्था होगा जिससे प्रमिक्त कम कार्य कुशल तथा खराब स्वास्थ्य होगा उनमें उत्पादकता कम होगी पुनः आय व उत्पादकता कम होगी और आय की कमी जो गरीबी के रूप में परिलक्षित होगी जो लगातार आय में कमी लायेगी जिससे बचत कम या शून्य होगी जो देश में पूंजी निर्माण की दर में कमी के कारण विमियोग में कमी उत्पादन में कमी आए देखने को मिलेगा। प्रो० नक्स ने गरीबी के कुचक्र की व्याख्या मांग एवं पूर्ति दोनों पक्षों पर की है।

गरीबी के कुचक्र / कुचक्र का पूर्ति पक्ष :-
प्रो० नक्स ने बताया अल्पविकसित देश में वास्तविक आय की मात्रा अत्यन्त कम है जिसके फलस्वरूप परिणाम स्वरूप बचत की समता अत्यन्त ही कम है पर आय की कमी अर्न्तव्यवस्था में अल्प उत्पादन का परिणाम है और अल्प उत्पादकता अधिकतर पूंजी की कमी के कारण जो बचत की समता में कमी के कारण है।

इस प्रकार अल्प आय के कारण बचत की क्षमता में कमी से जो चक्र प्रारम्भ हुआ था वह वही पर आकर पूरा हो जाता है। यही क्रम निरन्तर चलता रहता है।

पूर्ति पक्ष (Supply Side)



प्रदर्शित चित्र में कम वास्तविक आय के कारण बचत करने की क्षमता कम होगी जिससे बचत की मात्रा में कमी आयेगी। इससे पूंजी निर्माण तथा निवेश की मात्रा में कमी आयेगी जिससे कम उत्पादकता की कमी तथा वास्तविक आय में कमी होगी बायी ओर से चलकर यह चक्र जहाँ से प्रारम्भ हुआ था वही पूर्ण हो जाता है।

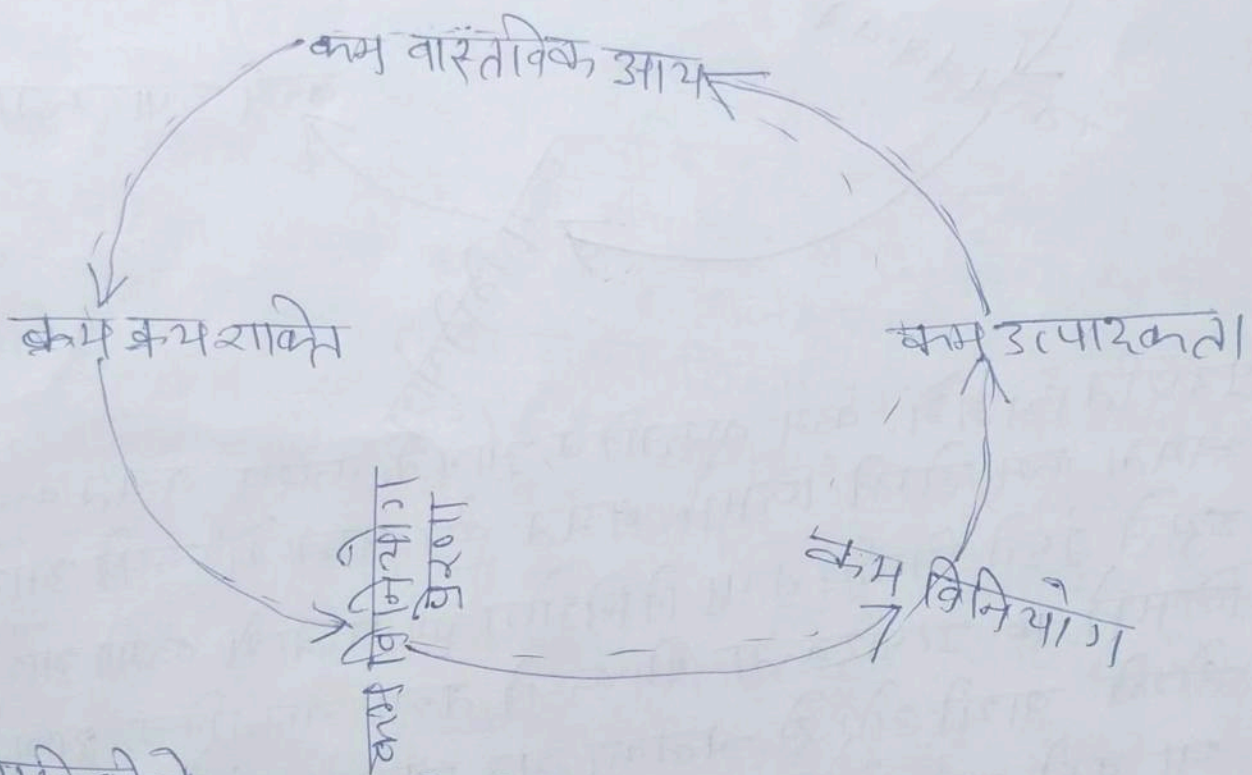
मांग पक्ष (Demand Side) —

किसी भी अर्थव्यवस्था का आर्थिक विकास केवल बचत तथा पूंजी निर्माण की दर पर ही निर्भर नहीं करता है। उत्पादित वस्तु की मांग या निवेश के लिए प्रेरणा का होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि बाजार का अभाव हो तो पूंजी की प्रचुर मात्रा के बावजूद भी आर्थिक विकास नहीं हो सकेगा। जे० मर्क्स ने बताया कि अल्पविकसित देशों में मांग पक्ष भी कुचक्र से प्रभावित है।

उत्पन्नविकसित देश में वास्तविक आय की कमी है।⁽¹²⁾

जिसके कारण इसकी कम शक्ति कम है। इससे सादगी की मांग भी कमी के कारण विनियोग की प्रेरणा कम मिलती है। प्रत्यक्ष मांग के अभाव में कोई भी सादगी पूर्ण विनियोग नहीं करेगा। आय

आय में कमी → कम शक्ति में कमी → विनियोग की प्रेरणा में कमी → विनियोग में कमी → उत्पादन ह्रास → वास्तविक आय में कमी



गरीबी के कुचक्र के दोनो ही पक्षों पर विचार करने से हम पाते हैं कि वास्तविक आय में कमी जो उत्पादकता की कमी के रूप में प्रदर्शित है दोनो एक कामन है वह है विनियोग की न्यूनता का परिणाम है। जे० नबर्स ने कहा है कि गरीबी का कुचक्र बढ़ने का प्रवृत्ति जलर होती है लेकिन यह अशुभ नहीं है और यदि इसे एक बार किसी बिन्दु पर तोड़ दिया जाय तो इसके विभिन्न तत्वों में चक्रात्मक सम्बन्ध होने के कारण आर्थिक विकास की प्रिया संचयी होगी इसे संतुलित विकास प्रत्याग्रम से तोड़ जा सकता है।

आर्थिक विकास के घटक स्पष्ट कीजिए -

प्रत्येक देश की आर्थिक समृद्धि अनेक घटकों से प्रभावित होती है -

प्राकृतिक संसाधन - प्राकृतिक संसाधनों से आशय उन समस्त भौतिक संसाधनों से है जो प्रकृति की ओर से किसी देश को उपहार स्वरूप प्राप्त होता है जैसे भूमि, जल, पदार्थ, वन, पवन, समुद्र, वर्षा, जलवायु, मिट्टी की बनावट भौगोलिक आदि यह प्राकृतिक साधन देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मानवीय संसाधन या अथवा किसी देश में रहने वाली कार्यशील जनसंख्या से है। अथवा के उत्पादन का एक महत्वपूर्ण अंग संसाधन साधन साधन माना जाता है। मानवीय अथवा ही वह शक्ति है जिस पर देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। मानव संसाधन विकास किसी देश का आर्थिक विकास उस देश में उपलब्ध मानव पूंजी के स्तर तथा संख्या की दृष्टि पर निर्भर करता है। विकासशील देशों में निपेक्षित आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव के विकास पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता। यही कारण है कि इन देशों में विकास के वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाते हैं। पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक पूर्व आवश्यकता है। जब तक राष्ट्र में पर्याप्त मात्रा में पूंजी निर्माण नहीं होगा तब तक आर्थिक विकास चालू नहीं हो सकता है। उद्यमशीलता किसी देश के आर्थिक विकास पर उस देश के संगठनात्मक ढांचे का भी प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिक प्रगति तकनीकी ज्ञान तथा नवीन मशीनों का आर्थिक विकास की दृष्टि से तब तक कोई महत्व नहीं है जब तक उन्हें व्यवहारिकता में न लाया जाय। तकनीकी प्रगति से नवप्रवर्तन पर जोर से किसी देश की अवस्था का ठीका सफा होता है। इसके अलावा विदेशी पूंजी अन्वेषण, राजनीतिक दृष्टि, सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि आदि पर निर्भर करता है।

The Role of Education and Research in Economic Development ⁽²⁹⁾

आर्थिक विकास में शिक्षा एवं शोध की भूमिका :-

किसी देश का आर्थिक विकास उसके कार्य कुशल, शिक्षित एवं प्रशिक्षित श्रम शक्तों पर निर्भर करता है। आर्थिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया मात्र ही नहीं परन्तु अंतिम रूप से यह एक मानवीय उपक्रम है। अन्य मानवीय उपक्रमों की भांति इसका परिणाम इसका परिणाम सही अर्थों में इसको संचालित करने वाले जनसमुच्चयों की कुशलता, गुणों एवं प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। यदि किसी देश की जनसंख्या उसके आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप है और उसके निवासी विवेकशील, परिश्रमी, शिक्षित व कार्यक्षम हैं तो निरसंदेह अन्य बातों के समान रहने पर उस देश का आर्थिक विकास अधिक होगा।

आर्थिक विकास की दृष्टि से भौतिक पूंजी की अपेक्षा मानवीय पूंजी को अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है क्योंकि मानवीय साधनों की कुशलता एवं दक्षता पर ही आर्थिक विकास का दायरा बढ़ा दिया जा सकता है। यदि किसी देश के पास प्रगति व श्रेष्ठतम मानव पूंजी उपलब्ध है तो उस देश की भौतिक पूंजी और भी अधिक उत्पादक बन जाती है। इसके विपरीत यदि मानव पूंजी का अभाव है तब भौतिक पूंजी का लाभपूर्ण उपयोग नहीं हो सकता। क्योंकि ऐसी हालत में चलती हुई मशीनें रुकने लगती हैं। उपकरण समय से पूर्व घिसने लगते हैं। उच्च उपज की क्रिस्म व उत्पादकता का स्तर गिर जाता है। आर्थिक पिछड़ापन दूर करने और प्रगति, समृद्धि व प्रोत्साहन उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि लोगों के ज्ञान व कुशलता में वृद्धि की जाय। वास्तव में मानव साधन के गुण में सुधार बिना किसी अल्पविकसित देशों में कोई प्रगति सम्भव नहीं है।

पूंजी निर्माण का अर्थ समझाइए।

[Explaining the meaning of Capital formation]

एक ही हुई समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था के पूंजी स्ठाक में हुई उस समयावधि में पूंजी निर्माण कहलाती है। जैसे यदि किसी अर्थव्यवस्था में पूंजी स्ठाक की कुल मात्रा K हो और एक वर्ष बाद उसमें पूंजी बढ़कर K_1 हो जाय तो $K_1 - K$ जिसे ΔK कह सकते हैं उस वर्ष में पूंजी निर्माण कहलायेगा। अर्थात् पूंजी निर्माण से आशय एक ही हुई समयावधि में अर्थव्यवस्था के वर्तमान साधनों अथवा कुल आय के उस भाग से है जिसका प्रयोग वह अर्थव्यवस्था में उपभोग व्यय पर न करके पूंजीगत वस्तुओं के निर्माण पर करती है जिससे उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ जाय।

$S = Y - C$ जहाँ $S =$ बचत, $Y =$ आय, एवं $C =$ उपभोग है। जहाँ बचत S पूरी मात्रा विनियोग हो जायेगी ($S = I$) जिससे पूंजी स्ठाक बढ़ जायेगा। प्रो० डी ब्राइट ने कहा है पूंजी स्ठाक में निम्नांकित आयोगों- भूमि से सम्बन्धित निर्माण या सुधार, व्यापारिक तथा सार्वजनिक उद्यमों के दाय में शरीर तथा यन्त्र, व्यापारिक उद्यमों के दाय में कच्चे माल का स्ठाक आदि पूंजी से आशय यह भी है कि मनुष्य द्वारा निर्मित उन सभी वस्तुओं से है जो उत्पादन में प्रयुक्त होती हैं ये उत्पादन क्रिया में समाप्त नहीं हो जाती हैं जैसे-मशीन, प्लांट, भवन आदि देश की अपनी मुद्रा पूंजी नहीं हैं पर विदेशी मुद्रा पूंजी होगी पूंजी आर्थिक को निर्धारित करने वाले कारकों में सबसे महत्वपूर्ण कारक है यह अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय के स्तर उत्पादन का स्तर, तकनीकी प्रगति, उत्पादन क्षमता आदि का निर्धारण करती है इस प्रकार पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक अनिवार्य आवश्यकता है तथा यह आर्थिक विकास का प्रधान-चालक तत्व है। यह उचित है कि किसी अर्थव्यवस्था में पूंजी स्ठाक में वृद्धि लायी जाती है उसे हम पूंजी निर्माण कहते हैं।

(33)

अल्पविकसित देशों में जनसंख्या विस्फोट की

समस्या को स्पष्ट किजिए।

Explain the problem of Population explosion in under developed countries.

संयुक्त राष्ट्र संघ 2025 रिपोर्ट के अनुसार विश्व की जनसंख्या 8.2 अरब को पार कर चुकी है। जनसंख्या के संदर्भ में विश्व की बात किया जाय तो 1830-1930 इन 100 वर्षों में जनसंख्या 1.5 गुनी हो गयी 1960 तक यह 3 अरब तक पहुँच गयी 1975 तक 5 अरब एवं 11 जुलाई 1987 को विश्व की जनसंख्या 5 अरब के बिन्दु को पार कर गई थी। जनसंख्या विस्फोट की अवस्था में आय में वृद्धि होने लगती है, शिक्षा, स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं का सेवा व्यापक हो जाता है जिससे मृत्यु दर में गिरावट आ जाती है और जन्म दर या तो स्थिर रहती है या मामूली गिरावट आ पाती है जन्म दर को प्रभावित करने वाली धार्मिक, सामाजिक, तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में परिवर्तन नहीं होता है इस प्रकार जन्म दर में भी एवं मृत्यु दर नीची रहती है जिससे जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होती है इसे जनसंख्या विस्फोट कहा जाता है। कि अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से यह स्थिति घातक होती है इससे सौखीन असंतुलन बिगड़ जाती है। अर्थव्यवस्था में निम्न प्रकार से बाधक होती है -

- * प्रति व्यक्ति आय में कमी
- * जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति में संतुलन
- * जनसंख्या और पूंजी निर्माण की गति में
- * अनुत्पादक उपभोक्ता का अत्यधिक भार
- * स्वास्थ्य, शिक्षा, एवं आवास पर अत्यधिक भार
- * जीवन स्तर का गिरना
- * कीमत स्तर में वृद्धि एवं भुगतान संतुलन की समस्या
- * बेरोजगारी में वृद्धि
- * पर्यावरणीय क्षति

भारत में जनसंख्या को नियन्त्रण करने के उपाय समझाए।

जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी लाना तथा उसका नियन्त्रण जनसंख्या मीट्रिक के विभिन्न क्षेत्रों में से एक है जिसे द्वारा किसी देश में जनसंख्या नियन्त्रण की जा सकती है। ये उपाय हैं जिनको विभिन्न जनसंख्या अधिकार वाले देशों जैसे चीन, श्रीलंका, मलेशिया आदि में प्रयोग लाया गया -

1. शिक्षा का विस्तार :- शिक्षा का विस्तार परिवार क्वाइट, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता पैदा करने वाली उम्मेदाकार है। शिक्षा का विस्तार जहां एक ओर लोगों में व्याप्त सामाजिक तथा धार्मिक अवरोध को दूर करेगा वहीं लड़कियों में रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद करेगा, शिक्षा लोगों को सौच को विस्तृत करेगी है। ग्रह शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता पैदा करता है।
2. समाज में महिला या लिंग भेद को दूर करना - समाज महिला के प्रति चेतना पैदा करके लिंग भेद को दूर किया जा सकता है। संविधान में महिला एवं पुरुष को समान अधिकार प्रदान किया है महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक व्यवस्थाएं की गयी हैं। सरकार द्वारा महिलाओं से सम्बंधित विविध कार्यक्रम चलाया जा रहा है।
3. औद्योगिकरण को बढ़ावा एवं कृषिक्षेत्र का यंत्रीकरण :- कृषिक्षेत्र का यंत्रीकरण तथा देश में औद्योगिकरण परिवार के आकार के सम्बन्ध में लोगों के विचार में परिवर्तन लाता है।
4. रोजगार तथा आय में वृद्धि तथा गरीबी में कमी - गरीबी तथा आय में कमी की स्थिति में परिवार के आकार में वृद्धि होती है। इसके लिए रोजगार के नए अवसर सृजित किया जाय।
5. नगरीकरण का विस्तार - नगरीकरण जितना है अधिक लोग आवास को व्यवस्था, कच्ची पानी तथा स्वच्छता आदि बहुत महंगी होती जाती है। इसलिए लोग छोटा परिवार रखने के लिए बाध्य होंगे।
6. परिवार नियोजन - परिवार नियोजन में परिवार के आकार को नियोजित रूप से कम रखने के उपाय करना, इनमें अधिकतम में क्वाइट करना, गर्भ निरोध को का प्रयोग आदि करके परिवार के आकार को छोटा किया जा सकता है।